श्री

जिनदेव दर्शन-फळ सिद्धि

.: विधि सहित .:.

प्रकाशक

महेता नागरदास मागजीभाई

—प्रस्तावना—

आ न्हाना पण उपयोगी पुस्तकमा अनेक वस्तुओनो संग्रह छे स्नान करीने पूजा करती वखते कइ कइ वस्तुओ ध्यानमा राखवी जोइए तथा क्या क्या कइ कट त्रिक साचववी जाइए तेनो ख्याल घणाने होतो नथी एटले ए वस्तुन आ पुस्तकमा खूबज विस्तार पूर्वक समजाववामा आवेल छे वळी चैत्यवंदनो अने स्तुतिओनो एटलो मोटो संग्रह छे क तेमाथी जुदा जुदा रागना घणा स्तवनो मळी शके छे उपरान टुका भावनाना पदो अने सज्झायो विगेरेनो पण सारो संग्रह छे एटले एकंदरे आ पुस्तक दरेक जैनने बहुज उपयोगी थइ पडे तेवु छे बाळ्यार लोपामा हजु आवु एकपण उपयोगी पुस्तक बहार पडेल नहि होवाथी अमारो प्रयत्न प्रथमज छे

प्रकाशक

आ पुस्तकना पहेला चार पेइज थी वीरविजय प्रिन्टींग प्रेसमा छपायेल छे अने बाकीनु रघु महेता चीमनलाल इश्वरलाले घीकाटा रोड उपर धी वसत प्रिन्टींग प्रेसमा छापेल छे

खंड पहेलो.

जिनदेव दर्शन–फळसिद्धि.

"मारे जिनदेव दर्शन करवा देराशरमा जवु छे" ए 'आवश्यक क्रिया' याद करवा बदल एक उपवासनी, देराशरमा जवा माटे तैयार थवा बदल छठ्ठना तपनी, देराशर तरफनो मार्ग लेवा बदल अठ्ठमना तपनी, देराशर पासे पहोन्च्या बदल चार उपवासनी, देराशरमां प्रवेश करवा बदल पंदर उपवासनी, अने श्रीजिनेश्वर भगवाननां दर्शन करवा बदल मास खमणनी तपश्चर्या जेटली 'फळसिद्धि' प्राप्त करी शकाय छे एम पूर्वाचार्यो कही गया छे.

"आवश्यक कर्म" तथा "दशत्रिक" एटले शु?

ज्यासुधी अनेक इच्छाओ, तृष्णाओ वासनाओ अंतःकरणने अपवित्र करी रही छे अने मनमांथी मेल गयो नथी त्यांसुधी शास्त्रादिमा प्रतिपादित जे क्रियाओ छे ते मुजब श्रद्धापूर्वक वर्तवामां कल्याण छे आ 'कर्ममार्ग'नी योजना एवी छे के तेनो आदर श्रद्धापूर्वक थते थते तेमाथीज अंते ज्ञान संपादन करवानी रुचि उपजे छे अने अंतःकरणमां सपोप साथे शुद्धता अनुभवाय छे, विवेक अने सम्यक्त्वना उदय थाय छे

आवी क्रियाओमा हंमेश करवा योग्य क्रियाओ दरेक दर्शने पोताना शास्त्रमा जणावेल छे. वैदिक शास्त्रमा तेमने 'नित्य कर्म' कहेल छे ज्यारे जैन दर्शनमा तेमने 'आवश्यक कर्म'–'आवश्यक क्रिया' कहे छे. जे क्रिया अवश्य करवा योग्य छे तेने 'आवश्यक क्रिया' कहे छे, श्री श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संप्रदाय माटे आ 'आवश्यक क्रिया'ना छ भाग करवामां आव्या छे. १–सामायिक, २–श्रीचतुर्विंशति स्तवन, ३–वंदन, ४–प्रतिक्रमण, ५–कार्योत्सर्ग, ६–प्रत्याख्यान. आ छ भाग पैकी बीजा 'स्तवन'ना भाग संबंधी संग्रहनो मुख्य विषय छे.

वर्तमान समयमा पाश्चात्य संसर्गोने लइ आपणी स्थिति-रीति-रहेणी-करणीमां अनेक विकारो आवी गया छे अने ते एटले सुधी के केटलाक विकारो तो जाणे स्वभाव सिद्ध होय तेवा अनिवार्य थइ पड्या छे. आमां क्रियामार्ग सेवनारने तो एटलुज समजवु घटे के क्रियानो आश्रय करवामां मुख्य हेतु श्रद्धा छे. आ श्रद्धा-अपूर्व शकारहित श्रद्धा थकी अंतःकरणना मेलनो नाश थाय छे. अन्तत क्रिया-कर्मनो अतिशय आडंबर इष्ट नथी तोपण जेटलु थइ शक तेटलु समजीने श्रद्धापूर्वक जरुर करवु अने पाळवु. नियम लेती वखते पोतानी शक्ति-परिस्थिति-देशकाळ वगेरे तपासवां, परन्तु नियम लीधा पछी तो तेमां किंचित पण विक्षेप करवो नहि तेम अश्रद्धालु पण थवु नहि आम थवाथी आपणा मर्कट समान मन अने इंद्रिओ उपर आपणे कावु धरावी शकवा शक्तिमान थइ शकशु अने आपणे आपणी आत्मोन्नति प्राप्त करी शकशु ए नि:शक वात छे.

भाव अने विधिना अभावे, कोइ पण शुभ-हितावह क्रियानु फळ आपणे जोइए तेवु प्राप्त करी शकता नथी. तेथी आ स्थळे "जिनदेव मंदिरे जवानी विधि" विषे कइक स्पष्टता करवानु उचित धार्यु छे. आ विधिना माटे प्रथम

"दशत्रिक" समजवानी खास अगत्य छे. अंतःकरणना सत्यभाव साथे आ "दशत्रिक" मुजब वर्तनार श्रावक-श्राविका उत्तमोत्तम फळ प्राप्त करी शकशे ए निःसंदेह वात छे.

(१) नैषेधिक त्रिक.–प्रथम 'नि.सीही' देरासरनां अग्रद्वारे कहेवी. 'नि.सीही' एटले मन-वचन अने कायाथी संसार व्यवहारना सघळा आर पंपारनो त्याग-निषेध करवो. प्रथम 'नि'सीही'ना उच्चार साथेज 'घर अने वहारनी तमाम घटनाओ भूली जवी' अने प्रभुमय थइ जवुं. जिन गभारामा पेसती वखते बीजी 'निःसीही' उच्चारवी आ उच्चारतांनी साथे ज 'द्रव्यपूजा'ना विषय साथे एकाकार थइ जवुं. चत्यवंदन करती वखते त्रीजी 'नि'सीही'नो उच्चार करीने स्तवनादि वडे 'भाव पूजा'मां तल्लीन थइ जवुं.

(२) प्रदक्षिणा त्रिक–पोतानां डाबा भागथी चैत्यने त्रण प्रदक्षिणा देवी अने मनमां एवी भावना भाववी के 'संसार-भ्रमणथी छुटवा माटे अनुक्रमे ज्ञान-दर्शन अने चारित्रनी आराधना करुं छु, अर्थात् त्रण प्रदक्षिणा ज्ञान-दर्शन-चरित्ररुप रत्नत्रयनी सिद्धिने माटे आपु छुं.'

(३) प्रणाम त्रिक–१–बे हाथ जोडी अंजली करी प्रणाम करवा ते. २–कडथी शरीरने जरा नमावी, माथा तथा हाथआदिथी भूमिनो स्पर्श करवो ते. ३–पचांग प्रणाम एटले बे जानु बे हाथ तथा मस्तक भूमिए लगाडी खमासमण आपी प्रणाम करवा ते. आ त्रण प्रकार प्रभुने प्रणाम थइ शके छे.

(४) पूजा त्रिक–(१) अंगपूजा (२) अग्रपूजा (३) भावपूजा एम त्रण प्रकारे प्रभुपूजा थइ शके छे अंगपूजामा मन वचन–कायानी पवित्रता साथे वस्त्रो, पूजाना साहित्यो तथा भूमि अने धननी पण शुद्धि होवी जोइए. प्रथम शुद्ध अने निर्दोष स्थाने शानचित्ते स्नानादि करी, निर्मळ वस्त्रो परिधान करी, आठ पडो मुखकोश थाय एवु उत्तरासंग राखी, मुखकोश बांधी, प्रभुनी अंगपूजामा प्रवृत्त थवु उचित छे अंगपूजाना प्रारंभमा प्रतिमाना प्रक्षालन पूर्वे भगवानना अंगने मोरपींछीथी के पुजणीथी प्रमार्जवु अने त्यारबाद स्नान थइ रह्या पछी प्रभुना अंगने अंगलुहणावती लुछी नाखी केसर–चंदन–कर्पूर आदिथी विलेपन करवुं तेमज घरेणा तथा फूल आदि चढावी मनने उल्लसित करवु. आ सर्वे अर्चा दरमी यान मनमा एक वात सतत् जाग्रत रहेवी जोइए के मात्र प्रभुने शृंगारवा माटेज पूजा नथी पण तेनी साथे आपणे

प्रभु जेवा निर्दोष बनी शकीए एटला माटे आ नवी विधि सेववामां आवे छे. पूजक आत्माए केवळ बाह्याडंबरमां मुंझाइ नहीं जता आत्मिक गुणो प्राप्त करवानो लक्ष राखवो जोइए. एम कहेवानो आशय छे.

अग्रपूजामां धुप–दीप–नैवेद्य आदिनो समावेष थइ जाय छे. अर्थात् प्रभुनी आगळ धुप करवो, दीपक प्रकटाववो तथा अक्षत फळ, ने नैवेद्य धरवा अने आरती तथा मंगळ दीवो उतारवो–घंट वजाववो ए सर्व अग्रपूजानो विषय छे. चोखानो साथीओ करती वखते पण साथीआना चार पांखडां ते चार गति, मनुष्यगति, देवगति, नरकगति तथा तिर्यचगति छे, एम विचारी, ए चारे गतिथी मुक्त थवा सारु तेनी उपरना त्रण वडु–ज्ञान- दर्शन–चारित्ररुपी त्रण रत्नो प्राप्त करवानी भावना भाववी जोइए. एटलुंज नहीं पण साथीयाना सर्वोपरि भागे जे अर्ध चंद्रकार चिन्ह करवामा आव छे ते सिद्धशिलानी प्रतिकृति छे एम विचारी ए स्थान मेळववानी त्रिलोकनाथने प्रार्थना करवी जोईए

भावपूजामा स्तुति, स्तवन तथा चैत्यवंदननो समावेश थाय छे. कार्यनी सफळता भावनेज अवलंबे छे. तेथी आ भाव पूजा वखते स्तुति–स्तवनादिना अर्थोनुं मनन करता भावना श्रेणीए आरोहण करवानो अभ्यास राखवो.

(५) अवस्था त्रिक–पिंडस्थ अवस्था, पदस्थ अवस्था अने रूपातीत अवस्था. प्रभुए तीर्थंकर नामकर्म बांध्युं त्यारथी लइने केवळज्ञान प्राप्त कर्युं त्या सुधीनी अवस्थाने पद्मस्थ अवस्था कहेवामा आवे छे अने तेमा पण जन्मावस्था, राज्यावस्था, श्रमणावस्था समाइ जाय छे. प्रभुने स्नान करावती वखते जन्मावस्थानुं चिंतन करवु, केशर–चंदन अने शृंगारो चडावती वखते राज्यावस्थानु चिंतवन करवु, अने भगवंतनी केशादि रहित मूर्त्ति निहाळी श्रमणावस्थानु ध्यान करवुं. पदस्थ अवस्थानुं ध्यान करती वखते केवळी तरीकेनी अवस्था चिंतववी, अने तेनी साथे आठ प्रातिहार्य तथा चार अतिशयनी भावना संयुक्त करवी. रूपातीत अवस्था ए सिद्धपणानी अवस्था छे. प्रभुने कार्योत्सर्ग मुद्राए स्थित थयेला निहाळी तद्रूप थवानी भावना भाववानी छे

(६) दिशावर्जन त्रिक–उंची–नीची अने आडी अवळी दृष्टि फेरववी मूकी दइ, केवळ मात्र जिनमुख उपरज दृष्टि स्थापि राखवी तेने दिशावर्जनत्रिक नामथी संबोधवामा आवे छे.

(७) पदभूमि प्रमार्जन त्रिक–चैत्यवंदनादि करती

वखते पग मूकवानी भूमिने त्रणवार पुंजवी तेने पदभूमि प्रमार्जन त्रिक कहे छे.

(८) आलंबन त्रिक—नमुथ्थुणं वगेरे सूत्रनो उच्चार करतां अक्षरो शुद्ध रीते बोलवा ते वर्णालंबन अने सूत्रना अर्थनु मनन करवु ते अर्थालंबन तथा जिन प्रतिमानी उपर दृष्टि स्थापी राखवी ते प्रतिमालंबन, एम आलंबनना पण त्रण प्रकार छे.

(९) मुद्रा त्रिक—अर्थात् योगमुद्रा, जिनमुद्रा अने मुक्ताशुक्तिमुद्रा. एम त्रण प्रकारनी मुद्राओ समजी भाविक पूजके योग्य अवसरे ते मुजब वर्त्तवु. बे हाथनी दशे आगळीओने परस्पर मेळवी कमळना डोडाना आकारे हाथ जोडी पेट उपर कोणी राखवी ते योगमुद्रा कहेवाय. आ मुद्राए खमासमण देवा अने स्तवनादि कहेवा. बे पगना आंगळानी वचमा आगळ चार आंगळ जेटलुं अने पाछळथी सहेज ओछु अंतर राखी उभा रही काउसग्ग करवो ते जिनमुद्रा कहेवाय. आ मुद्राए वांदणा देवाना छे, अरिहंत चेइआणं आदि कहेवाना तथा काउसग्ग करवाना छे. बे हाथ सरखा गर्भितपणे भेगा करी कपाळना मध्य भागमां लगाडवां तेने मोतीनी

छीप जेवो मुद्रा कहेवामां आव छे. आ मुद्राए जयवीयराय आदि भणवाना छे.

(१०) प्रणिधान त्रिक–(१) जावंति चेइआइ गाथाथी चैत्यवंदनरुप प्रणिधान थाय छे, (२) जावंत केवी साहु गाथाथी गुरुवंदनरुप प्रणिधान थाय छे अने (३) जयवीयराय प्रमुख सूत्रथी प्रार्थना स्वरुप प्रणिधान थाय छे.

चैत्यवंदन, स्तवन, पूजनादिक विधिनी सामान्य समज

श्रीजिन स्तुतिओ, श्लोको अने स्तोत्रोमांथी पोताने प्रिय जणाय तेवा अने तेटला, भावपूर्वक–एक चित्ते, शान्तिमां भंग न थाय अने आपणा थकी बीजाने खलेल न पहोंचे तेवी रीते गाया पछी 'स्वस्तिक भावना'ना साथे स्वस्तिकनी वंदि कर्या बाद

" इच्छामी खमासमणो, वंदीउं,
जावणी जाए, निसीहीआए,
मत्थएण वंदामी–प्रभुजी ! मत्थएण वंदामी. "

ए नम्र विज्ञप्ति साथे त्रण खमासमण भावपूर्वक देवां. पछी चैत्यवदन एक कहेवुं पछी 'जकिंचि' नो पाठ बोली, 'नमुथ्थुण'नो पाठ कहेवो अने ए पछी 'जावति चेइआइ'नो पाठ बोली एक खमासमण देवु. बाद 'जावति केवीसाहु'नो पाठ कहीने 'परमेष्टि नमस्कार' कही जिन स्तवनोगाथी पोताने प्रिय जणाय तेवा अने फावे तेटला एकथी वधु स्तवन शांति अने भावपूर्वक कहेवां ते पछी 'जय वीयराय' सूत्र कहेवुं. बाद उभा थइने 'अरिहंत चेइआण'नु सूत्र कहीने 'अन्नथ्थ उससीएण'नो पाठ भणी एक नवकारनो काउसग्ग करवो. काउसग्ग पूरुं थाय एटले 'नमो अरिहताण' कहीने एक थोय कहेवी. अने पछी खमासमण दइ, उल्लास पूर्वक प्रभुजीने वंदन करी दर्शन क्रिया समाप्त करवी. पूजा करवानो भाव अने जोग होय तो ते क्रिया आरंभवी. चैत्यवंदन अने स्तवनादिनी क्रिया कर्या पहेला पण पूजानी क्रिया आरंभी शकाय छे. पूजन करवा वदल बुद्धिमान रमणनी फळसिद्धि मळी शके छे दर्शन- पूजन आदि सपूर्ण क्रिया कर्या पछी नमुक्कारसी, विगइ निवइ अथवा पोताने सुगम जणाय ते पच्चखाण लेवुं

जोइए एटले प्रभु सामे ए पच्चखाणनो पाठ बोली जवो जोइए. तेम करवाथी पच्चखाण लीधेला गणाय. प्रभुजीना दर्शन करती वखते धूप पूजा करी शकाय छे अने प्रभुजी समक्ष चमर पण ढाळी शकाय छे स्तवन गाती वखते ते चमर हाथमा लइने नृत्य पण करी शकाय छे

श्रीस्तुति–स्तोत्र अने श्लोकादि सग्रह.

१–भाव महिमा.

भावे भावना भावीए, भावे दीजे दान,
भावे जिनवर पूजीए, भावे केवळ ज्ञान.

२–दर्शन महिमा

दर्शन देव देवस्य, दर्शन पाप नाशनं,
दर्शन स्वर्ग सोपान, दर्शन मोक्ष साधनं.
प्रभु दर्शन सुख सपदा, प्रभु दर्शन नवनिद्ध,
प्रभु दर्शनथी पामीए, सकळ पदारथ सिद्ध

३–पूजन महिमा.

जीवडा जिनवर पूजीए, पूजानां फळ होय,
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय,
पाच कोडीने फुलडे पाम्यो देश अढार,
कुमारपाळ राजा थयो, वर्त्यो जयजयकार.

❀

४–मांगलिक भावना.

मंगल भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभु
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥

❀

५–श्रीनवकार मंत्र स्मरण.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो,
मंगलाणंच सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं ॥

❀

६

सरस शांति सुधारस सागरं, शुचितर गुणरत्न महागरं,
भविक पकज वोध दिवाकर, प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं.

❀

७

त्रण जगतना आधार ने अवतार हे करुणातणा,
वळी वैद्य हे दुर्वार आ संसारना दुःखो तणा,
वितराग वल्लभ विश्वना तुज पास अरजी उच्चरु,
जाणो छता पण कही अने आ हृदय खाली करु.

८

पूर्णानंद मय महोदय मय, कैवल्य चिद्दृग् मय,
रुपा तीर्थ मय स्वरुप रमणं, स्वाभाविकी श्रीमयं,
ज्ञानो द्योत मय कृपा रस मयं, स्याद्वाद विद्या लय,
श्रीसिद्धाचळ तीर्थराज मुनिप, वंदेह मादिश्वर.

९

श्रेय श्रिया मंगल केलिसद्म, नरेन्द्र देवेन्द्र नताघ्रि पद्म,
सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान चीरंजय ज्ञान कला निधान.

१०

मंदिर छो मुक्ती तणी, मांगल्य क्रीडाना प्रभु,
श्रीइन्द्र नरने देवता, सेवा करे भारी विभु.

सर्वज्ञ छो स्वामी वळी धारक अतिशय सवर्नां,
अमर वर्तो अमर वर्ती, भंडार ज्ञान कळा तणां.

११

अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणां भंडार,
ते गुरु गोतम समरीये, वंछित फळ दातार.

१२

ऊे प्रतिमा मनोहारीणी दुःख हरी, श्रीवीर जिणंदनी,
भक्तोने ऊे सदा प्रिय करी, जाणे खीली चंद्रनी
ए प्रतिमानां गुण चित्त धरीने, जे श्रावको गाय ऊे,
पामी सघळा सुख ते जगतना, मुक्ति भणी जाय ऊे.

१३

सकळ कर्म वारी मोक्ष मार्गाधिकारी,
त्रिभुवन उपगारी केवळ ज्ञान धारी.
निशदिन सेवा करं अंतर भक्ति भावे,
श्रीजिन पूजन करंता सर्व संपत्ति आवे.
जिनवर पद सेवा सर्व संपत्ति दाइ,
निशदिन सुख दाइ कल्पवल्ली सहाइ.

१४

सविजन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी,
दुर्गति दु.ख भारी, शोक संताप वारी.
श्रेणीक सम सुधारी, केवलानंद धारी,
नमे सौ नरनारी, जेह विश्वोपकारी.

१५

विश्वना उपगारी, धर्मना प्रचारी,
धर्मना दातारी, काम क्रोधादि वारी.
तार्या नर नारी, दु'ख दोहग हारी,
वीर जिन निहाळो, जाउ हु नित्य वारी

१६

शीतल जिन स्वामी पुन्यथी मोक्ष पामी,
प्रभु आत्म रामी सर्व प्रभाव धामी
जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद स्वामी,
एवा शीतल स्वामी, प्रणमीए शिश नामी.

(१७)

वंदो जिन शांति, जास सोवन्न कांति,
टाळे भव दुःखांति, मोह मिथ्यात्व भ्रांति.
द्रव्य भाव अरिपांति, तास करतां निकांति,
धरता मन खांति, शोक संताप वांति.

❁

(१८)

दोय जिनवर लीला, दोय पीळा सुशीला,
दोय रक्त रंगीला, काढतां कर्म कीला.
न करे कोइ हीला, दोय श्यामा सलीला,
सोळ स्वामीजी पीळा, आपजो मोक्ष लीला.

❁

(१९)

जिनवरनी वाणी, मोह वल्ली कृपाणी;
सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी.
अर्थे गुथांणी, देव मनुष्य प्राणी,
प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशानी

(२०)

चक्रेश्वरी देवी हर्ष हैडे धरेली,
जिनवर पाय सेवी, मार श्रद्धा वरेवी.
जे नित्य समरती, दु'ख तेहना हरेवी,
पद्म विजय कहेवी, भव्य सताप पवी.

(२१)

ॐकार बिन्दु संयुक्त, नित्य ध्यायन्ति योगिन
कामद मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नम' ॥

(२२)

अरहतो भगवंत इद्र महिता' सिद्धाश्च सिद्धि स्थिता,
आचार्या जिन शासनोन्नति करा पूज्या उपाध्यायका
श्रीसिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया राधका,
पच इते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तुनो मगलम् ॥

(२३)

ससार दु खके वैद्य हो, त्रैलोक्यके आधार हो,
जय श्रीश ! रत्नाकर प्रभो, अनुपम कृपा अवतार हो,

गतराग है विज्ञप्ति मेरी, मुग्धकी सुन लीजीए,
चयोंकि प्रभो! तुम विज्ञहो, मुझको अभय वर दीजीए.

❁

(२४)

क्रोधाग्निसे मैं रात दिन हा! जर रहा हूं हे प्रभो,
मैं लोभ नामक सापसे काटा गया हुं हे प्रभो,
अभिमानके खल ग्राहसे अज्ञानवश मैं ग्रस्त हुं,
किस भाति हों स्मृत आप, माया जालसें मैं व्यस्त हु

❁

२५ श्री रुषभदेव स्तुति.

पाद कमल जश भावसुं ए वंदे इंद नरिंद तो,
नाभिकुल नभमां वली ए शोहे जेम दिनंद तो।
पांचसे धनुपनी धारत ए देही प्रभु गुणवत तो,
प्रणमुं तेहने प्रेमथी ए आदीश्वर भगवंत तो ॥ १ ॥
जग जनना दुखवारक ए, मिथ्यातम हरनार तो,
भवभय सर्व टालत ए पूरण जगदाधार तो।
शुकल ध्यानने ध्याइने ए पाम्या केवल नाण तो,
टालो सर्व जिनपति ए अम सहु दुःखनी खाणतो ॥ २ ॥
आदीश्वर मुख सांभलीए त्रिपदी गुरु गण धार तो,

नय निक्षेपना भगथी ए रिरची वाणी सुसार तो।
मत्रल मिथ्यात्वना वासथी ए सचित जन मन में लतो,
चार तेहने मूलथी ए जलमम वाणी महेल तो ॥ ३ ॥
गोमुख यक्ष चक्केसरीए निर्मल समकित वत तो,
प्रभु शासन रखवाल्क ए अतिशय ऋद्धि महत तो।
आदि प्रभु पद सेवता ए टारो अम मन भ्राति तो,
दीनसेवक इम भाषत ए आपो मन बहु शाति ता ॥ ४ ॥

❦

२६ श्री शातिनाथ स्तुति.

शाति जिनपति प्यारा देह सोवन धारा,
जग शाति कारा चक्री भोगो निहारा।
गृह धन सहु छोरा जारिया कर्म सारा,
लहि भवजल पारा मोक्ष धामे पधारा ॥ १ ॥
जिन वर समुदाया नित्य आनद पाया,
सकल गुण मदाया स्थान लोकाग्र पाया।
भविजन हितदाया देव पूजत पाया
सकळ मन सुहाया सेवता दुःख जाया ॥ २ ॥
जिनवरनी वाणी मानु पीयूष खाणी,
विविध नय भराणी करत कर्मोनी हाणी।
अमरपति वखाणी परम आलोक दाणी,
सवि गुणनी ठाणी धारीए नेह आणी ॥ ३ ॥

घन सम तनु धारी भूरि ऐश्वर्य धारी,
दरिशन शुद्ध कारी चार हस्ते करारी।
गरुड जक्ष सारी आपदा शीघ्रवारी,
भविक सुख स्वधारी होय सौभाग्य कारी ॥ ४ ॥

२७ श्री नेमनाथ स्तुति.

राज समुद्र केरा वंशे अवतरिया प्रभु,
तरुणावस्थे काम निवारी तजी ममता विभु।
दीक्षा लइने केवळ पाम्या थया मुगति पति,
वंदू एवा नेमिजिनने मुदा नित चित्त रती ॥ १ ॥
दोय जिनंदा निलावरणे धोला शुभ दो प्रभु,
राता वरणे जिनयुग प्याग काळा तिम दो प्रभु।
जिनवर सोले कंचन वरणे स्वामी समताकरा,
जिनपति मर्ने दीन दयाला देजो सुखने खरा ॥ २ ॥
प्रभु मुख वाणी लागे मीठी इक्षुरसनी झरी,
संशय टाले भविजन केरा पीतां एहीज खरी।
निर्मल तत्वो जिनमत केरा हुंसे करी जाणिये,
तिमिर अनादि टाली करी श्रद्धा शुद्ध आणिये ॥ ३ ॥
मृगपति पीठे सुंदरी बेसी रही सुखी अंबिका,
सुरवधकी गाती नेमिजिनना गुणो हितकारिका।

जिनवर सेवक सौभागना टालो विघ्नो सवी,
कंचन वर्णे जिन गुण राती भक्ति भरी एहवी ॥ ४ ॥

२८ श्री पार्श्वनाथ स्तुति

धरणींद्रे पूजित पार्श्वनाथ जिनराज,
जस पाये रुडु लछन भोगि विराज ।
पद्मावती देवी सेव करे जस पाय,
हु प्रणमु तेहने नीलमणि सम काय ॥ १ ॥

कनकाचल शिखरे मिलकर चोसठ ईंद,
अभिषेक करीने स्तविया सवि जिन चंद ।
अम मोह तिमिरना वारक गुण भरपूर,
पदपंकज तेहना वंदी करो दुख दूर ॥ २ ॥

जिनमुखथी निकल्यो वाणी तणो जलपूर,
मन मेलने वारे आप सुख भरपूर ।
शुद्ध मारग दर्शक दीप परे गुणवंत,
दिल धारो भविया जिनवच पूरणखंत ॥ ३ ॥

प्रभु पारस केरो चरण कमलनो दास,
शाम वर्णे सोहे पार्श्व यक्ष गुण वास ।

वहु ऋद्धि धारी पार्श्वनाथ गुण जाण,
दुःख संघना कापो एवी सोभागनी वाण ॥ ४ ॥

❖

२९ श्री महावीर प्रभु स्तुति.

सिद्धारथ नदन वंदिये, भव भवना पाप निकंदिए।
निशदिन तेहने ध्याइये, शिव लक्ष्मी सुख जिम पामिये ॥१॥
जन्म थकी चउ अतिशया, कर्म क्षय इगिअर होइया।
देव किया तिम ओगणीसा, वंदूं जिन एहवा चोवीसा ॥२॥
शास्त्र सवी जिनवर भापता, गणधर सघलां गुथता।
मर्म ते तस केरो धारिए, जिम संताप सवि मन वारिये ॥३॥
प्रभु वीर तणा पद सेवतो, गुण तेहना प्रतिदिन गावतो।
मातंग यक्ष सुख आपशे, सौभाग्य तणुं दुःख कापशे ॥४॥

❖

३० श्री सीमंधर जिन स्तुति.

श्री सोमधर दीन दयाला जग जन तारण हारोजी,
महा विदेहमा देशना आपी मिथ्या तम सवि वारोजी।
भरत क्षेत्रना मानवी प्रणमे तुम पद वारं वारजी,
मुनि सोभाग ने पूरण भावे करजो बोधी वधाराजी॥१॥

❖

३१ श्री सिद्धाचल स्तुति.

श्री शत्रुजय महीतल मंडण भव जल तारण नावाजी,
उत्तम पुरुषा जिहा कने सीध्या, ध्याइ आदीश्वर देवाजी।
तेवीस जिनपति पूरण प्रेमे आव्या वळी इण ठामाजी,
वंदे ध्यावे मुनि सोभाग्य गिरिवर एह गुण धामाजी ॥१॥

*

३२ श्री सिद्धचक्रनी स्तुति.

भवि नमन करो तुम सिद्ध चक्र सुखदाय।
नव आंबिल केरो तप करी नव पद ध्याय।
त्रिहु काले प्रभुनी पूजा करो उजमाल,
सहु आपद जावे होवे सुख रसाल ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध सूरि वंदू तिम उवझाय,
मुनि दर्शन ज्ञान संयम तप सुखदाय।
ए नव पद समरत कष्ट टले छिन माय,
सुख संपत्त सघळी आवे निज घर माय ॥ २ ॥
नव आंबिल करता गणिये वीसे माल,
दोय टंके आवश्यक देव वन्दन त्रिहु काल।
करि भूमि शय्या ब्रह्मचर्य व्रत धार,
इत्यादिक विधिए करो आगम अनुसार ॥ ३ ॥

पुडरिक गुणपति सिद्धि साधी,
कोडी पण मुनि मनहर;
श्री विमल गिरिवर श्रंग सिद्धा,
नमो आदी जिनेश्वरं. ४

निज साध्य साधन सुरमुनिवर,
कोडी अनंत ए गिरिवरं,
मुक्ति रमणी वर्या संगे,
नमो आदी जिनेश्वरं. ५

पाताळ नर सुर लोक मांही,
विमळ गिरिवर तो परं,
नहि अधिक तिरथ ए गिरि सम,
नमो आदी जिनेश्वरं. ६

एम विमळगिरिवर शिखर मंडण,
दुःख विहंडण ध्याइये,
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे,
परम ज्योति नीपाइए. ७

जीत मोह क्रोध विछोह निद्रा,
परम पद स्थिति जयकरं,
गिरिराज सेवा करण तत्पर,

३१ श्री सिद्धाचल स्तुति.

श्री शत्रुंजय महीतल मंडण भव जल तारण नावाजी,
उत्तम पुरुषा जिहा कने सीध्या, ध्याइ आदीश्वर देवाजी
तेवीस जिनपति पूरण प्रेमे आव्या वली इण ठामाजी,
वंदे प्यावे मुनि सौभाग्य गिरिवर एह गुण धामाजी ॥१

३२ श्री सिद्धचक्रनी स्तुति.

भवि नमन करो तुम सिद्ध चक्र सुखदाय ।
नव आंबिल केरो तप करी नव पद ध्याय ।
त्रिहु काले प्रभुनी पूजा करो उजमाल,
सहु आपद जावे होवे सुख रसाल ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध सूरि वंदू तिम उवझाय,
मुनि दर्शन ज्ञान संयम तप सुखदाय ।
ए नव पद समरत कष्ट टले छिन माय,
सुख संपत्त सघली आवे निज घर मांय ॥ २ ॥
नव आंबिल करता गणिये तीमे माल,
दोय टंके आवश्यक देव वंदन त्रिहु काल ।
वरि भूमि शय्या ब्रह्मचर्य व्रत धार,
इत्यादिक विधिए करो आगम अनुसार ॥ ३ ॥

श्रीपाल तणी परे करतां नव पद जाप,
सहु संकट विघटे जावे तेम संताप ।
श्री विमलेश्वर देवा विघ्न सवी हरनार,
करो सौभाग्य वधारा मन धरि प्रेम अपार ॥ ८ ॥

३३ श्री स्वस्तिक-भावना

ॐ
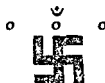
दर्शन ज्ञान चारित्रना, आराधनथी सार,
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार.
अक्षत स्वस्तिक करतां थका, सफळ करुं अवतार,
फळ मागु प्रभु आगळे, तार तार मुज तार.
श्रावक कुळमा जन्मीने, रवड्यो बहु संसार,
अष्ट कर्म निवारवा, मागु कृपा दातार
चिहुं गति भ्रमण ससारमा, जन्म मरण जंजाळ,
पंचमगति वीण जीवने, सुख नहि त्रिहुं काळ.

खंड प्रथम सपूर्ण.

———•———

खंड बीजो

श्री चैत्यवंदनादि संग्रह.

श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

निमल केवल ज्ञान कमला,
कलित त्रिभुवन हित करं,
सुरराज संस्तुत चरण पंकज,
नमो आदी जिनेश्वरं. १

विमल गिरिवर शृंग मंडण,
प्रवर गुण गण भूधर,
सुर असुर किनर कोडी सेवित,
नमो आदी जिनेश्वर. २

करती नाटक किनरी वळी,
गाय जिन गुण मनहरं,
निर्जरावली नमे अहर्निश,
नमो आदी जिनेश्वरं ३

पुडरिक गुणपति सिद्धि साधी,
कोडी पण मुनि मनहर,
श्री विमल गिरिवर श्रग सिद्धा,
नमो आदी जिनेश्वर. ४

निज साध्य साधन सुरमुनिवर,
कोडी अनत ए गिरिवर;
मुक्ति रमणी वर्या संगे,
नमो आदी जिनेश्वरं. ५

पाताळ नर सुर लोक मांही,
विमळ गिरिवर तो परं,
नहि अधिक तिरथ ए गिरि सम,
नमो आदी जिनेश्वरं. ६

एम विमळगिरिवर शिखर मडण,
दुःख विहंडण ध्याइये,
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं,
परम ज्योति नीपाइए. ७

जीत मोह क्रोध विछोह निद्रा,
परम पद स्थिति जयकरं,
गिरिराज- सेवा करण तत्पर,

श्री सर्व तीर्थनुं चैत्यवंदन

आज देव अरिहंत नमुं समरुं तारुं नाम,
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिन तणी त्यां त्यां करुं प्रणाम,
शत्रुंजय श्री आदि देव नेम नमुं गिरनार,
तारंगे श्री अजीतनाथ आबु रिखव जुहार.
अष्टापद गिरी उपरे जिन चोवीशे जोय,
मणिमय मूरत मानशुं भरते भरावी सोय.
समेत शिखर तिरथ वडो ज्यां वीशे जिन पाय,
वैभार गिरीवर उपर वीर जिनेश्वर राय.
मांडवगढनो राजीओ नामे देव सुपास,
सेवक कहे जिन समरता पूरो मननी आश.

श्रीशातिनाथनुं चैत्यवंदन.

शाति जिनेश्वर सोळमा, श्री अचिरा सुत वंद;
विश्वसेन कुळ नभो मणि, श्रीभविजन सुखकंद.
शाति लंछन 'मृग' जाणीए,
हस्तिनापुर नयरी धणी,
चालीश धनुष्यनी
वदन १४४५

श्रीपार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन.

आशपूरे प्रभु पासजी, त्रोडे भवना पास,
वामा कुखे अवतर्या, सर्प लंछन जास.
अश्वसेन सुखकार ए, नव हाथनी छे काय,
काशी देश वणारसी, प्रभुजी जन्म सुहाय.
एकसो वरसनुं आउखुं, पाळी पारस नाथ.
पद्म कहे मोक्षे गया, नमतां सुख निरधार.

श्रीनेमनाथनु चैत्यवंदन

नेमनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना पिताय.
दश धनुष्यनी देहडी, आयु वरस हजार,
'शंख' लंछन स्वामीजी, तजी राजुल सुनार.
सौरीपुर नयरी लिन भये, ब्रह्मचारी भगवान,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता अविचळ ठाम.

श्री चोवीश जिनवर्णनुं चैत्यवंदन.

पद्मप्रभु ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए,
चंद्रप्रभु ने सुविधि नाथ, दोय उज्वळ लहीए,

मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दोय लीला निरख्या,
मुनिसुव्रतने नेमनाथ, दोय अंजन सरीखा,
अन्य सोळ जिन कचनसमा एवा जिन चोवीश
सेवा कर अति मानथी, रटण करुं अहोनिश.

॥

श्री पच परमेष्टि चैत्यवदन.

बार गुण अरिहत देव, प्रणमी जे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरता, दु:ख दोहग जावे,
आचारज गुण छत्रीश, पचवीश उवजाय,
सत्तावीश गुण साधुना, जपता सुख थाय,
अष्टोतर सय गुण मळीए, एम समरो नवकार,
धीर विमळ पंडित तणा, नय प्रणमे नितसार.

॥

श्री महावीर स्वामीनुं चैत्यवदन.

सिद्धारथ सुत वदीए, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रिय कुडमा अवतर्या, सुर नरपति गायो.
मृगपति लछन पाउले, सात हाथनी काय,
बहोतेर वर्षनु आउखु, वीर जिनेश्वर राय.
खीमा विजय जिनराजनोए, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात.

श्री सीमंधर स्वामीनु चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वितराग, त्रिभुवन तमे उपगारी;
श्री श्रेयास पिताकुळे, बहु शोभा तुमारी.
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी,
वृषभ लंछन विराजमान, वंदे नर नारी.
धनुष्य पाचसे देहडीए, सोहिए सोवन वान,
उपाध्याय किरतीविजय, विनय धरे तुम ध्यान.
श्री सीमधर जगधणी, आ भरते आवो,
करुणावंत करुणा करी, अमने वदावो.
सकळ भक्त सदा मानीए, छो अमारा नाथ,
भवो भव हुं छुं ताहरो, नहि मेल्हु हवे साथ
सयळ संग छंडी करी, चारित्रमय थइशुं;
पाय तमारा सेवीने, शिवरमणी वरशु
रंकतणी मुज आशने, सफळ करो अरिहत;
इहां थकी हु विनउं, अवधारो गुणवंत.

श्री बीजनुं चैत्यवंदन.

बोध्यो जेणे श्रेष्ठ धर्म, चोथा अभिनंदन,
बीजना जन्म्या ते प्रभु, भव दुःख निकंदन.
करो त्याग द्वेष रागनो, आदरो धर्म ध्यान,
एम प्रकाश्यु सुमतिजिने, ते चवीया बीज दिन.
होय बंधन राग द्वेष, तेहने भवी तजीए,
मुज परे शीतळजिन कहे, बीज दिन प्रभु भजीए.
जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण,
वासुपूज्य ने बीजनो, प्रगटयो केवळज्ञान
निश्चय नय व्यवहार दोष, एकांत नव लइए,
अरनाथ बीज दिन चवी, एम मनडाने कहीए.
वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण,
बीजे दिन केइक पामीआ, प्रभु नाण निर्वाण.
एम अनंत चोवीशीए, हुवा बहु कल्याण,
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुखखाण.

श्री ज्ञान पंचमीनुं चैत्यवंदन.

त्रिगडे बेठा वीरजिन, भावे भविजन आगे,
त्रिकरण शु त्रिहु लोकजन, निसुणो मन रागे १

आराहो , भलीभातसें, पंचमी अजुआळी,
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथी निहाळी. २
ज्ञान विना पशु सरीखा, जाणो एणे संसार,
ज्ञान आराधन लहुं, शिवपद सुख श्रीकार. ३
ज्ञान रहीत क्रिया कही, काश कुसुम उपमान,
लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान. ४
ज्ञानी श्वासोश्वासमें, करे कर्मनो खेह,
पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह. ५
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान,
ज्ञानतणो महीमा घणो, अंग पांचमे भगवान. ६
पंचमास लघु पचमी, जावज्जीव उत्कृष्टि,
पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि. ७
एकावनही पंचनोए, काउस्सग्ग लोगस्स करो,
उजमणुं करो भाव शु, टाळो भव फेरो. ८
एणी पेरे पचमी आराधीए आणी भाव अपार,
वरदत्त गुण मजरी परे, रंग विजय लहीसार. ९

आठमनु चैत्यवंदन.

महा सुद आठम दीने, विजया सुत जायो,
तेम फागण शुद आठमे, संभव चवी आव्यो.

चैत्र वदनी आठमे, जन्म्या रीखभाजिणंद,
दिक्षा पण ते दिन लही, हुवा प्रथम मुनीचंद. १
माघ शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दुर,
अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपुर. २
एहीज आठम उजळी, जन्म्या सुमतीजिणंद
आठ जाती कळशे करी, नवरावे सुरइंद्र. ३
जन्म्या जेठ वदी आठमे, मुनि सुव्रत स्वामी,
तेम अषाढ वदी आठमे, अष्टमी गती पामी. ४
श्रावण वद आठम दीने, नमी जन्म्या जगभाण,
तेम श्रावण शुद आठमे, पासजीनो निर्वाण ५
भाद्रवा वदी आठमे, चविया स्वामि सुपास,
जीन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिव वास. ६

श्री ... चैत्यवंदन.

एकादससें चउग्गुणो,, तेहनो परिवार,
वेद अर्थ अवळो करे, मन अभिमान अपार. ३

जीवादिक संशय हरीए, एकादश गणधार,
वीरे थाप्या वंदीए, जिन शासन जयकार. ४

मल्ली जन्म अरमल्ली, पास वरचरण;
रुषभ अजित सुमत मल्ली, धन घाति विनाशी. ५

पद्म प्रभु शिववास पास, भवभवना बंध तोडी,
एकादशी दीन आपणी, रिद्धि सघळी जोडी. ६

दश क्षेत्र त्रिहुं काळना, त्रणसें कल्याण प्रसस;
अग्यार एकादशी, आराधो वरनाण. ७

अग्यार अंग लखावीए, एक दश पाठा,
पुजणी ठवणी वींटणी, मसी कागळ काठा. ८

अगीआर अव्रत छाडवा, वहो पडिमा अगीआर,
खीमाविजय जीनशाशने, सफळ करो अवतार. ९

❦

खड त्रीजो

श्री जिन स्तवन चोवीसी.

१

रिखभ प्रभु अर्ज है मेरी, कृपाकर धारिये दिल में,
कृपाकर धारिये दिल में, कृपाकर धारिये दिल में। रिखभ०
दयानिधि नाथ तु सबका, भवोभव शांति के दाता।
आया हुं चरण में तेरे, बचाले शीघ्र भवजल से। रिखभ०
तु ही है विश्व का त्राता, तु ही है विश्व का बंधु।
हटादे कर्म कठिमलसें, छुटादे मोह बंधन से। रिखभ०
रझलवे चार गतियों में, सही में वेदना भरती।
दयाकर तारिये उस से, यही है प्रार्थना तुज से। रिखभ०
दबा हूं विविध व्याधि से, घडीभर नाहि है शान्ति।
छुडादो दासको उनसे, मिलु ज्युं नाथ मैं तुज से। रिखभ०
राग अरु द्वेष जो दुष्मन, उन्हीं से होत हु हैरान।
कृपाकर दासपे प्यारा, छुडा दे पलक में उनसे। रिखभ०
अतिशय जो है तेरे में, नही वो अन्य देवों में।
मिले जो स्वाद अमृत से, नही वो अन्य वस्तु से रिखभ०

इसी से लुब्ध हुं तेरे, गुणो में परम भक्ति से।
सिद्धि सौभाग्य को देवो, छुटुं ज्युं नाथ भव दुःख से।
रिखभ प्रभु अर्ज हय मेरी, कृपाकर धारिये दिलमें ॥

२

अजित प्रभुने वदना नित्य करिये, नित्य करिये रे नित्य करिये,
हारे करिये तो भवजळ तरिये, हारे वरिये शिवमाळ । अजित.
अष्ट कर्मना मर्मने क्षय कीधा, हारे वीतराग थया प्रसिद्धा,
हारे जन्म मरणना अंत तें कीधा, हारे मुक्ति महंत । अजित.
वीतराग पण भक्तना भय चूरे, हारे मनवांछित इच्छित पूरे ।
हारे चिंतामणि चिंता चूरे, हारे पूरे मनना कोड । अजित०
भवसिंधुमा बूडता भविजनने, हारे प्रभु झहाज सम्रा सज्जनने ।
हारे भक्ति वाले कर्म इंधनने, हारे आपे शिवपुर राज । अजित.
रवि परे उद्योत हृदय करनारा, हारे अज्ञान तिमिर हरनारा ।
हारे शुभ बोधि बीज देनारा, हारे भांगे सघला दुःख । अजित
अर्थिजनोना इष्टने प्रभु पूरे, हारे कल्पतरू सम चिंता चूरे ।
हारे वळी कुमतिने काढे दूरे, हारे आपे निर्मल ज्ञान । अजित०
नरक निगोदना दुःखने परिहारे, हारे भक्तजनोनी भीड निवार
हारे आधि व्याधिने पाप प्रजाळे, हारे प्रभु सहजानंद । अजित.

तारक तारो अमने, घणुं शुं कहिये तमने,
जाणो छो सहु तुम पर उपकारी, संभवनाथ हो। नित०
शाश्वत सिद्धि आपी, सौभाग्य दुःख कापी,
दीजिये अव्यय सुख हितकारी, संभवनाथ हो। नित०

४

अभिनंदन जिनराजने रे, नमिये मन धरि प्रेम सलूणा।
जग रक्षक प्रभु तूं भलो रे,
तूंही ज सर्वना स्वाम सलूणा।
सकल भविदुःख भंजणो रे,
सकल गुणोनुं धाम सलूणा। अभिनंदन०
मुखपंकज तुज जोवता रे,
प्रसरी मुज मन शांति सलूणा।
नाम तमारूं ध्यावतां रे,
प्रगटे अंतर कांति सलूणा। अभिनंदन०
शांत मुद्रा तुज जोइने रे,
विकसी मुज मन प्रीति सलूणा।
महेर करो मुज उपरे रे,
जावे ज्यु भवजळ भीति सलूणा। अभिनंदन०

सिद्धि गति ने आपीने रे,
पूरो सौभाग्यना कोड सलूणा. अभिनंदन०

६

सुमति जिनंद गुणखाणरे भवि सेवो हृदयथी ।
शिवसुखदाता भवोदधि तारक,
गुणमणि रोहण जाण रे । भवि सेवो०
इन्द्रादिक सहु सुरगण मळिने,
करता जस गुणगान रे । भवि सेवो०
परिहरवा जन मोहतिमिर ने,
दिनमणिसम प्रभु जाण रे । भवि सेवो०
वञ्छित पूरे भवभय चूरे,
अप निर्मल नाण रे । भवि सेवो०
रोग शोग तम दूर पलाये,
जोता जिनमुख भाण रे. भवि सेवो०
नाम जपता एह प्रभुनुं,
होवे दुरितनी हाण रे. भवि सेवो०
मन वच काया वश करीने,
धरिये एहनुं ध्यान रे. भवि सेवो०

शुद्ध मारग मुज दाखो, निज चरण कमलमा राखो।
सिद्धि गति जिम अति प्यारी, लहे दास सौभाग्य ते सारी। पद्म०

७

सुपार्श्व जिन उपकारिया मारा व्हालाजी,
प्रणमुं नित तुम पाय मारा व्हालाजी।
जोइ जोई तुज मूर्तिने मारा व्हालाजी,
हर्ष नही मन माय मारा व्हालाजी ॥ १ ॥
मधुर नयन तुज खीलवा मारा व्हालाजी,
कमल परे ते सुरूप मारा व्हालाजी।
मुख मंडल तिम शोभतु मारा व्हालाजी,
समता सुधारस कूप वहालाजी, ॥ २ ॥
कोडी गमे नित देवता मारा व्हालाजी,
करता तुम पद सेव मारा व्हालाजी।
देवनारी तिम आगले मारा व्हालाजी।
नाटय करे बहु [1]हेव मारा व्हालाजी ॥ ३ ॥
ज्ञान अनत तिम शक्तिने मारा व्हालाजी,
धारत प्रभु जगदीश मारा व्हालाजी,

---

१ हेव–टेव

सिद्धि लेहे भवि ए प्रभु महेरे,
वालि सौभाग्य कल्याणरे। भवि० सेवो०

६

पद्मजिनद मुज प्यारा, निज सेवक पार उतारा।
तु छे प्रभु जगतनो रायो, वली मुनि जनने मन भायो।
सकलगुणे करि सोहे, प्रभु सेवकना मन मोहे। प०
दर्शन करी प्रभु ताहरा, पाप पडल गया सहु माहरा।
दूर थया कर्मना पाशा, तिम पूर्ण थइ सवि आशा। प०
नेह धरी प्रभु बहु दिलमा, मुज काज करो एक पलमा।
कर्म बंधनना भय कापो, प्रभु शांति सदा मुज आपो। प०
नयन युगल प्रभु ताहरा, भर्या समता सुधाथी गहरा।
सेवक जन तेह जोई प्रभु, हर्षित मन अति होई। प०
धनुष अढीसय काय, वळी तीस पूरव लख आय।
चोतीस अतिशय धारी, तुज कीर्ति करे सुरनारी। प०
जो तुज वचनामृत भावे, भवि अजर अमर पद पावे।
जन्म मरण भय सहु वारी, प्रभु! पामे ते सुख अपारी।
प्रभु भक्तिरसे मन भरियु, तुम चरण कमलमा ढरियु।
भरयुं रहे नवि बयारे, लही कमल न रहे अली[1] न्यारे।

---

[1] 'अली' भमरा

शुद्ध मारग मुज दाखो, निज चरण कमलमा राखो ।
सिद्धि गति जिम अति प्यारी, लहे दास सौभाग्य ते सारी। पद्म॰

७

सुपार्श्व जिन उपकारिया मारा व्हालाजी,
मणमुं नित तुम पाय मारा व्हालाजी ।
जोड जोई तुज मूर्तिने मारा व्हालाजी,
हर्ष नही मन माय मारा व्हालाजी ॥ १ ॥
मधुर नयन तुज खीलता मारा व्हालाजी,
कमल परे ते सुरूप मारा व्हालाजी ।
मुख मंडल तिम शोभतु मारा व्हालाजी,
समता सुधारस कूप वहालाजी, ॥ २ ॥
कोडी गमे नित देवता मारा व्हालाजी,
करता तुम पद सेव मारा व्हालाजी ।
देवनारी तिम आगले मारा व्हालाजी ।
नाट्य करे बहु [1]हेव मारा व्हालाजी ॥ ३ ॥
ज्ञान अनंत तिम शक्तिने मारा व्हालाजी,
धारत प्रभु जगदीश मारा व्हालाजी,

---

१ हेव–टेव

करे न कोइ जीव उपरे मारा व्हालाजी,
    प्रभुजी मीत के रीस मारा व्हालाजी ॥ ४ ॥
चोत्रीस अतिशय शोभता मारा व्हालाजी,
    किरणथी जेम [1]दिनेश मारा व्हालाजी ।
पांत्रीश विधें प्रभु वाणिये मारा व्हालाजी,
    करता भवि उपदेश मारा व्हालाजी ॥ ५ ॥
दोष अढार ने जीतीने मारा व्हालाजी,
    पाम्या अव्यय धाम मारा व्हालाजी ।
शाश्वत सुखने पामीया मारा व्हालाजी,
    रमता निज परिणाम मारा व्हालाजी ॥ ६ ॥
तो हवे प्रभु मु तारवा मारा व्हालाजी,
    कृपा करो वीतराग मारा व्हालाजी ।
इष्ट सिद्धि सुख किजीये मारा व्हालाजी,
    इण विध कहत सौभाग्य मारा व्हालाजी ॥ ७ ॥

८

चंद्र प्रभुजीने करू विनति रे लो,
    जग बंधव जग प्रतिपाल जो ।

---

१ दिनेश-सूर्य.

प्राण थकी प्रभु वालडा रे लो,
नित्य गावुंजी तसगुण मालजो । चंद्रप्रभुजीने० ॥१॥
करुणानिधि प्रभु तुं भलोरे लो,
भक्तवत्सल जिन राज जो
शरण ग्रहुं प्रभु ताहरुं रे लो,
पूरिये मुज सहु काज जो । चंद्रप्रभुजीने ॥२॥
हरणीं जोइ जिम सिंहने रे लो,
पवन वेगे जाय दूरजो ।
तिम शात छबी तुज जोवता रे लो,
कुमती गइ मुज दूरजो । चद्रप्रभुजीने० ॥३॥
कारण विना प्रभु कार्यनी रे लो,
सिद्धि कदि नवि थाय जो ।
तिम ध्यान विना प्रभु ताहरा रे लो,
मुक्ति नही भवि पाय जो । चंद्रप्रभुजीने० ॥४॥
पूरव पुण्यथी पामीयोरे लो,
दर्शन तार दयाळ जो ।
दुःख गयां सौ माहरां रे लो,
काज सर्यां छे मयाळ जो । चंद्रप्रभुजीने० ॥५॥
अश्ववेगे मन माहरु रे लो.

चंचल भमतुं छे मंद जो ।
पण शांत दशा हवे पामीपुरे लो,
निरखीने तुज मुख चंदजो । चंद्रप्रभुजीने० ॥६॥
अंकुश वशे जिम हाथीयारे लो,
होवे ज्युं ततखिण थीरजो ।
तिम तुम वाणीना पानथीरे लो ।
थयु छे मुज मन धीरजो । चंद्रप्रभुजीने० ॥७॥
गुण गातो इम ताहरारे लो,
उभो छुं बे कर जोडजो ।
विविध सिद्धिने आपीनेरे लो,
पूरो सौभाग्यना कोड जो । चंद्रप्रभुजीने० ॥८॥

९

सुविध जिनंद जुहार, भविकजन सुविधि जिनंद जुहार ।
राज सुग्रीव सुत जतरजामी,
जगदीश्वर हितकारी भविकजन-सु० ।
निर्मल ज्ञान बले करी प्रभुजी,
करता भवि उपकार भविकजन-सु०
प्रभु मुख मुद्रा जोता नयणें,
होवत हर्ष अपार भविकजन-सु०

दर्शन करि मधुरु प्रभु केरं, सफल करो अवतार भविकजन०
प्रेम करो नित ए प्रभु साथे, छंडी अवरनो संग भविकजन०
पूरण हो भवि एहनि महेरे,वंछित फळ सहु चंग भविकजन०
एकज चित्ते एहने भजना, विनशे सघळां दुःख भविकजन०
करम भरम सहु दुर पलाये, प्रकटे आतम सुख भविकजन०
मोह घटे भवि ए प्रभु ध्याने, जागे हृदय विवेक भविकजन०
पूरण नेह करी प्रभु साथे, गावो प्रभु गुण टेक भविकजन०
गुण गाता एम तीर्थपतिना, होशे भवतणो अंत भविकजन
सिद्धि सौभाग्य ने नितप्रति पामो,लहिये सुख अनंत भविकज०

१०

चंद्र पर शीतल गुणवंता, ज्ञान अनंते भरिया ।
घाति अघातिने दूर हठावी, मुक्ति वधुने वरिया रे
भविका शीतल जिनवर पूजो, देव न जगमा दूजो रे.भविका
नेवु धनुपनी सोहत काया, माता नदानो नंद ।
श्रीवत्स लंछन छे जस पाये, नमिये येह जिनंद रे. भविका०
वार वार प्रभु स्तवना करिने. तास गुणो दिल धरिये ।
कहे सौभाग्य ते प्रभुने प्रणमी, सिद्धि गतिने वरीए रे.
भविका शीतल जीनवर पूजो, देव न जगमा दूजे रे भविका०

११

श्री श्रेयास जिनदजी, सुणजो मुज अरदास जी।
चरण ग्रह्या में नाहरा, राखो निज पद पास जी ॥ १ ॥
सृष्टि तणी रग भूमिमा, नाच्यो वार अनंतजी।
वेष भज्या कइ जातिना धार्या पाप महंत जी ॥ २ ॥
शाति कहीये न पामीयो, पाम्यो केवल दु ख जी।
नाथ हवे मुज उद्धरो, आपो तुम सम सुखजी ॥ ३ ॥
अवर देव जाचु नही, तजी तुम सम देव जी।
रमता नही हंस छिल्लर, तजी मानस सेव जी ॥ ४ ॥
जे दिनथी तुम आ उवी, जोइ पूरण प्रेम जी।
आश फली सवि माहरी, पाम्यो आतम खेम जी ॥ ५ ॥
अतुल्यवली प्रभु तू भलो, कर्म अरि बल वार जी।
मोह महा भट वारिने, पाम्यो ज्ञान अपार जी ॥ ६ ॥
ध्यान करता ताहरु, आकुलता सवि जाय जी।
शाति मले चित्तमा घणी, जावे सत्व अपाय जी ॥ ७ ॥
नाम जपु नित ताहरु, मूकी सर्वे जजाल जी।
पायें सिद्धि सहु दीजिये, करिये सौभाग्य निहालजी ॥८॥

१२

भवि प्रणमो वासुपूज्यजी मनमोहनजी,
समता सुधारस कूप-मनडुं मोहुं रे मन मोहनजी.
जगनायक परमेसरु मन० प्रभु धारक शुद्ध स्वरूप-मनडुं०
चोसट सुरपति सेवता मन० चरण कमल जससार-मनडुं०
देव नारी सवि आगले मन० करती नाट्य प्रकार-मनडुं०
ज्ञान वडे प्रभु ज्ञेयने मन० पूर्ण पणे नित जाण-मनडुं०
रमता निज निज रुपमां मन० निर्मल गुण मणि खाण-मनडुं०
भणता गारुडी मंत्रने मन० न रहे फणिधर विष-मनडुं०
तिम तुम नामे प्राणीनुं मन० जाय भुजगनु विष-मनडुं०
कर्म दहन सवि बालवा मन० जगज्योती प्रभु जोय-मनडुं०
ध्यान करंता एहनु मन० पातक भवोभवनां खोय-मनडुं०
भमरी होय जिम ईलीका मन० धरती तस गुणनु ध्यान-मनडुं०
तिम भवि होवे तुम समा मन० धरता तुम गुणनुं ध्यान-मनडुं०
ध्यान बले करि वारिया मन० भूरा सर्व कषाय-मनडुं०
केवल लक्ष्मीने पामीया मन० शिवपुरनो महेल सोहाय-मनडुं०
स्तवतां एम जिन बारमा मन० भवि पामे सिद्धि मार्ग-मनडुं०

१३

विमल विमल प्रभु हुं भजु, वारि प्रेम धरी मन मांय ।
दु ख सहु मुज प्रभु वारिने, वारि राखो निज पद छाय॥

मुख मडल तुम प्रभु जोइने, वारि पाम्यो परम आनद ।
चित्त चोट्यु प्रभु तुज ध्यानमा, वारि चकरा जेम दिनद॥

सत्य तारक तुम जाणीने, वारि आव्यो तुम पद पास ।
कृपा करि मुज उपर, प्रभु आपो शिवपुर वास ॥

वारवार तुज निरखी करी, वारि मूर्ति मनहर रग ।
मग्न थयो तुज रागमा, वारि जेवो कमले भृग ॥

मानस सर जिम हसने, वारि चंद चकोरने जेम ।
केकि मन ज्यु जलधर वस्यो, स्वामी मुज मन तूही तेम॥

नाम विमल तुम बोलता, वारि होव निर्मल मन्न ।
तिण कारण तुम नामनो, वारि जाप जपु सुप्रसन्न ॥

जग रक्षक प्रभु तु खरो, वारि सेवकनी कर सार ।
सिद्धि सौभाग्य ने आपीने, वारि करजे भवजल पार ॥

(१८)

अनंत प्रभुने धारो रे भवियण चित्तमा,
जिम सवि नामे कर्म अरि उन्माद जो ।
सवि संपत रे नित नित नवली पामिये,
अनुभविये वह अविचल सुखनो स्वाद जो ॥ अनंत०॥

सात राज ने छेट रे प्रभु जइ वस्या,
किम करि आवुं तिहा प्रभु तुम पास जो ।
तो पण करुणा करिने मुज ऊपरें,
सेवकनी सुणजो घणी अरदास जो ॥ अनंत०॥

तारकता गुण खरो रे तुजमा जाणीने,
आव्यो छु तुज चरण कमलनी छाय जो ।
दया करी राखो रे मुज सम बालने,
पडता एहने भव समुद्रनी माय जो ॥ अनंत०॥

वीनतडी एहवी रे प्रभु मुज साभली,
कापजो मारी भवभवनी दु ख जालजो ।
मन वछित सिद्धि रे नित सौभाग्यनी,
पूरजो प्रभुजी दूर करी जजाल जो ॥ अनंत०॥

(१५)

पुण्यवंता भविका धर्म जिनद सेवो भावशु ।
दीन वत्सल महिमा निधि प्रभुजी, करुणा रस भरपूर ।
भवभव करा फरा निवार, अर्पे आतम नूर रे ॥ पुण्यवंता०

काम क्रोध लोभादि शत्रु, हणिया छिन मे जेह ।
निर्मल केवल ज्ञान लहीने, पाम्या अव्यय गेह रे ॥पुण्यवंता०

मनहर प्रभुनु नाम जपता, जागे धर्मनी बुद्धि ।
कर्म मेल सट दूर हटे छे, प्रगटे आतम ऋद्धि रे ॥ पुण्यवंता०

लाख चोरासी जीव योनिमा सहता नवनव दु ख ।
एहवा भविने पलमा तारी,आप अविचल सुख रे॥ पुण्यवंता०

जगमा नहीं छे उपमा जेहनी, धरता इण विध रूप ।
द्धान्ति पण यार प्रभुने, लेवा तेनु रूप रे ॥ पुण्यवंता०

धनुष चालीसनी ऊची काया, सोवन वरण सुहाय ।
भानु नृपना नंदन निरखी,हर्षित तनमन थाय रे ॥पुण्यवंता०

त्रिकरण शुद्धे जे भवि प्राणी, ध्यावे ए वीतराग ।
सिद्धि सत्रि एक छिनमा पावे, होवे अटल सोभाग रे ॥
पुण्यवंता भाविका धर्म जिनद सेवो भावशु ।

(१६)

शांतिजिनेसर तूही वडोर ।
जगनायक जगभाण । साहिब मनवसिगा ।

विश्वसेन राजा तणोरे, नदन गुणमणि खाण । साहिब०
सोवन वर्ण सोहतो रे, धनुष चालीसनी काय । साहिब०
लाख वरसनुं आउखुं रे, हरिण लंछन जस पाय । साहिब०
तुज आगे नाचे शची रे, इंद्र करे गुणगान । साहिब०
देवो पण सर्वे मली रे, भक्ति करत एकतान । साहिब०
मुख शरदनो चंदलो रे, हसत रहत गुणवत । साहिब०
नेत्र कमल तिम विकसता रे, शांति पराग वहंत । साहिब०
करजोडी करु वीनति रे, तमने दीन दयाल । साहिब०
जिम तार्युं पारेवडुं रे, तिम तारो निज बाल । साहिब०
आश करे जे आपणी रे, करिये नहि निराश । साहिब०
तिम तुम सेवक प्राणीने रे, पूगे मुज सहु आश । साहिब०
मुजने पलक न वीसरो रे, जिम केकी मन मेह । साहिब०
नेह नजरथी जोवतां रे, वधशे मुज गुण रेह । साहिब०
यावत प्रभु तुम नामने रे, प्रसरे शाति अपार । साहिब०
विघ्न ते सघळां उपसमे रे, होवे जय जयकार । साहिब०
गुण गाता एम तुम तणा रे, प्रगटे पूरण भाग्य । साहिब०
सिद्धि घणी पुन पामीने रे, पामे परम सौभाग्य ॥ साहिब०

(१७)

कुंथु जिनंद प्यारा, नमता हूं नाथ तुमको ।
शक्ति अनंत भरिया, समता सुगुण का दरिया,
मुक्ति रमा को वरिया, नमता हूं नाथ तुमको. कुं थु. ॥१॥

नृप सूरजीका नंदा, टालोजी कर्म फंदा,
देवो विशुद्धानंदा, नमता हूं नाथ तुमको. कुंथु ॥२॥

चारो गति का फेरा, वारोजी नाथ मेरा,
करलो पदाति चेरा, नमता हूं नाथ तुमको. कुंथु. ॥३॥

ममता गई है मेरी, मूर्ति निहाल तेरी,
उठगी भवां की फेरी, नमता हूं नाथ तुमको. कुंथु. ॥४॥

जपता जी नाम तेरा, विनशाहै मोह मेरा,
मिलिया विवेक डेरा, नमता हूं नाथ तुमको. कुंथु. ॥५॥

करुणासे दास तारो, कुगति के द्वार ठारो,
कर्मन के वध वारो, नमता हूं नाथ तुमको कुंथु. ॥६॥

मनकी उपाधि चूरो, सिद्धि सुखो को पूरो,
करलो सोभाग शूरो, नमता हूं नाथ तुमको. कुंथु. ॥७॥

(१८)

अर जिनेश्वर नाथ निरंजन, भवभय भंजन स्वामी सुहाया ।
परम दयालु जग हितकारी, शिव सुख शाश्वतना प्रभु दाया ॥
ज्ञान दर्शन ने चरण धरंता, तिम वली वीर्य अनंतुं धरता ।
सादि अनंत ने भागे वसता, सुंदर मुक्ति वधू संग रमता ॥
स्वर्ण वर्ण सम देह दीपे, तेजे शशी तिम सूर झीपता ।
प्रथम चंद्र ज्युं मुखडुं शोहे, नयन कमल नित रहेत खोलता ॥
राय सुदर्शन वंशमां चंदा, तीम अनुप जस देहज हाथ ।
सहस चोराशी वरसनुं आयु, नमतां ए प्रभुजी अघ खोवे ॥
शरण नहिं प्रभुजी तुम केरुं, नरक निगोदना दुःखमा पडियो ।
क्रोध करी घणुं कर्मज बाध्युं, वृद्धि घणी तेणे भवनी लहियो ॥
कृपा कटाक्षनी कणिका नाखी, तारो तमारा दासने वेगे ।
जन्म मरणना फेरा निवारी दीजिये मोक्ष नगर सुख वेगे ॥
द्वादस स्वर्गना दश सुरिंदा, विंशति भुवनपतिना इंदा ।
व्यंतर जातिना बत्तीस इंदा, ज्योतिषना वली सूर ने चंदा ॥
ए सवि चोसठ इंद्र मलीने, करता सदा तुम पादनी सेवा ।
नमत सोभाग ते एहवा प्रभुने, सिद्धि [illegible] ॥

(१९)

मल्लि जिनद भगवान रे मुज तारो सेवकने ।
जगत गुरु जग वधव प्यारा, जगदीश्वर जगभाण रे ॥ मुज
कुभ नरराना कुळमांह दीवो, प्रभावती सुत जाण रे ॥ मुज०
कलश लछन जस पायन शोहे, इद्रनील सम वान रे ॥ मुज०
सहस पचावन वर्षनु आयु, वीस धनुष देह मान रे ॥ मुज०
मन मोहन जग सोहन प्यारा, वर्जित कलिमल खाण रे ॥मुज०
दर्शन करि प्रभुजी तुम केरु, लीन थयो तुम ध्यान रे ॥मुज०
भव भव केरा फेरा टारी, आपो निर्मल ज्ञान रे ॥ मुज०
दास सौभाग्य आ सिद्धिने काजे, अरज करत सावधान रे ॥

(२०)

मुनि सुव्रत जिन राजजी रे, भूप सुमित्रनो नद ।
करुणानिधि प्रभुजी भला रे, भविक चकोरमा चद हो॥प्रभुजी०
दास तमारो तारजो रे, कर्म शत्रुने वारजो रे, आपजो दर्शन शुद्ध.
कच्छप लछन धारता रे, वीस धनुषनी काय ।
तीस सहस वर्ष आउखु रे, जोता हर्ष न माय हो ॥ प्रभुजी०
नेह नजर तुम होवता रे, प्रगटशे मारु भाग्य ।
इष्ट सिद्धि प्रभु पामीने रे, पामीश पूरण सौभाग्य हो॥प्रभुजी.
दास तमारो तारजो रे, कर्मशत्रुने वारजो रे आपजो दर्शन शुद्ध।

(२७)

देवराजी पूजित पाया, सर्वे जनोना मनमा भाया ।
जग तारक बिरुद धराया, त्रण लोक तणा प्रभु राया रे
नेमिनाथ तणा गुण गावो पूरण भावना तेहनी भावो रे—नेमि०

यादव वंश गगन दिनंदो, मात शिवानो सुंदर नंदो ।
वंछित पूरण सुरतरु कंदो, जेहने सेवे सुरनर इंदो रे ॥ नेमि०

मेरु सहोदर वण सोहे, लंछन शंखनुं पाये सोहे ।
योगि जनोना मनने मोहे, वली पाप पटल मवि खोहेर ॥नेमि०

सर्वे पशुने जीवित दीधु, वर्ष सुधी प्रभु दान दीधु ।
वर्ष त्यपाछ चारित्र लीधु, अल्प समयमां केवल सीधुं रे॥नेमि०

मही तले बहु स्वामि विचरी, मान बले भवि प्राणि उधरी ।
शेष अघाति करमने टारी, सुंदर मुक्ति वधूने धारी रे ॥नेमि०

एम प्रभुना गुण गण गावो, तस नामना मंत्रने ध्यावो ।
तेहथी सिद्धि सर्वे तुम पावो, तिम सौभाग्यने प्रतिदिन पावोरे॥
नेमीनाथ तणा गुण गावो पूरण भावना तेहनी भावो रे

⊛

(२३)

शिव सुख दाता, भवजल त्राता, पारसनाथ जिनद,
प्रभु जग जन भ्राता, केवल दाता, निज गुण राता-पारस०
अश्वसेन कुल दीवडो रे, राणी वामानो जात।
नमीये एह जिनराजने रे, लछन भोगि विख्यात रे ॥ प्रभु०
नवकर उंची सोहती रे, नीलमणि सम काय।
एहवो प्रभुनु आउखु रे, निरखत हर्ष न माय रे ॥ प्रभु०
कमठे रची तुम उपरे रे, घोरघटा जलधार।
क्षोभ नही तुम त्या थयो रे, अहो तुम धैर्य अपार रे ॥ प्रभु०
नाम तमारु समरता रे, सीझे छिन मे काज।
कलियुगमा तुम जागतो रे, अतिशय महिमा आज रे ॥ प्रभु०
भव्य जीवो तुम जोइने रे, उलसे छे मुज मन्न।
विस्मयकारक अतिशय धारी, तुजने छे प्रभु धन्य रे ॥ प्रभु०
अजब दया छे ताहरी रे, जेनुं कथन न थाय।
जलतो अहि तुम महेरथी रे, धरणीधर पद पाय रे ॥ प्रभु०
महर करो इम दासपर रे, तारो दीन दयाल।
सकल सिद्धि मुज आपीने रे, करिये सोभाग निहालरे ॥प्रभु०

(२४)

अरज सुणो मुज वीरजी प्यारा, कर्म निकंदन शूराजी।
जग जनने अति अचरजकारी, एवा पराक्रम धाराजी ॥ अ०
राज सिद्धारथना कुल दीवा, त्रिसला मात मलहायाजी।
मृगपति लंछन छे प्रभु पाये, कंचन वानती कायाजी ॥ अ०
ज्ञान बले प्रभु विप्र जनोना, मन अभिमान उताराजी।
आपी तत्वने शिष्य बनाया, अहो तुम ज्ञान अपाराजी ॥ अ०
जे काले तुम एह भरतमा, करता प्रभुजी विहाराजी।
ते काले प्रभु तीन भुवनमा, होता बहु उजियाराजी ॥ अ०
तत्र देशक तुम सम प्रभु विरहे, पडियो बहु जंजालजी।
सार करो तुम एह सेवकनी, आपो बोध रसालजी ॥ अ०
तुम कृपाना लेश थकी पण, पामीश सिद्धि रसालजी।
कहत सोभाग ते दास तमारो, मन धरि भक्ति विशालजी ॥
अरज सुणो प्रभु वीरजी प्यारा, कर्म निकंदन शूराजी

श्री स्तवन चोवीशी संपूर्ण

विशेष स्तवनादि संग्रह

श्री रिखभदेव तथा सिद्धाचळजीनां स्तवन.

१

माता मरुदेवीना नंद ! देखी ताहरी मूरती
मारु मन लोभाणुजी—मारु चित्त लोभाणुजी
देखी ताहरी मूरती, मारु मन लोभाणुजी. १

करुणा नागर करुणा सागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाउले काइ धनुप पांचसें मान—माता. २

त्रिगडे बेसी धर्म कहता, सुणे पर्षदा बार,
जोजन गामनी वाणी मीठी, वरसती जळधार—माता ३

उर्वशी रुडी अपछराने, रामा छे मन रंग,
पाये नेपूर रणझणे काइ, करती नाटारंभ—माता० ४

तुंही ब्रह्मा तुंही विधाता, तुं जग तारणहार,
तुज सरीखो नहि देव जगतमां, अरवडीया आधार—माता०५

तुही भ्राता तुही माता, तुही जगतनो देव
सुर नर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव—माता० ६

श्री सिद्धाचळ तीरथ केरो, राजा रिषभ जिनंद,
कीर्ति कर माणेक मुनि ताहरी, टाळो भव भय फंद,
प्रभुजी टाळो भव भय फंद—माता० ७

८

सुन आदी जिनवर देव वर्णाजी दास तणी अरदास,
तुज आगळ बाळक परजी हु पण करु अरजी नेमरे जिनजी
मुज पापीने र तार.

हु अवगुणनो ओरडोजी, गुण तो नहि लवलेश,
परगुण पखी नवी शकुजी, कम ससार तरीशर जीनजी.मुज०

जीव तणा वध में कर्याजी, बोल्यो मृषावाद,
कपट करी पर धन हर्याजी,सेव्या विषय सवादर जिनजी.मुज०

हु लपट हु लालचु जी, पाप कीधां कोड़ लाख,
त्रण भुवनमा कोइ नहिजी,जे आवे मुज साथ र जिनजी मुज०

कुमती कुटिल कदा ग्रहीजी, वांकी गती मती मुज,
वांकी गती म्हारी प्रभुजी,शी सभळावुं तुजरे जिनजी.मुज०
काजळथी पण शामळोजी, मारां मन परिणामें,
स्वप्ना मांहो ताहरुंजी, संभोळुं नहि नाम रे जिनजी मुज०
मुग्ध लोक ठगवा भणीजी, करुं अनेक प्रपच,
कुड कपट हु केळवीजी, पाप तणो करु संच रे जिनजी.मुज०
मन चंचळ न रहे केमेजी, राचे रमणी रे रूप,
काम विटबणाशु कहुंजी,पडीश हुं दुरगति कूपरे जिनजी.मुज०
नगुणो तोपण ताहरोजी, नाम धराव्यु दास,
कृपा करी नचावजोजी,पूरजो मुज मन आश रे जिनजी.मुज०
तुं उपकारी गुण भर्योजी, तु सेवक प्रतिपाळ,
तुजने शुं क६ घणुंजी, तुं सौ वाते जाण रे जिनजी. मुज०

३

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधीरे काय,
कल्प वृक्ष पर तास इंद्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय.

रोग उरग तुज नविनडे, अमृत जे आस्वाद,
तेहथी प्रतिहत तेहमानु कोइ नवि करे, जगमा तुमशुं वाद.

वगर धोइ तुज निरमली, काया कंचनवान,
नहि प्रस्वेद लगार तारे तु तेहने, जे धर ताहरु ध्यान.

श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वाद,
देखे न आहार नीहार चरम चक्षु धणी, एवा तुज अवदात

राग गयो तुज मन थकी, तेहमा चित्त न कोय,
रुधिर आमिशथी रोग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय.

चार अतीशय मूलथी, ओगणीश देवना कीध,
कर्मखप्याथी अगीआर चोत्रीश एम अतीशय, समवायांगे प्रसिद्ध

जिन उत्तम गुण गावता, गुण आवे निज अंग,
पद्मविजय कहे एम समय प्रभु पालजो, जेम थाउ अक्षय अभंग
प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय.

४

चालो चालोने जइए सोरठ देशमां रे!
ज्यां पुंडरीक गीरी भरयात,
नमो नेह धरी गीरीराजने रे।
ए तरणतारण तीरथ जाणीए रे!
एनो महीमा अपरंपार—नमो नेह धरी०

अनंता मुनिवर ए गिरी, वरीया शिववधु नार,
वळी अनता अहीं फने, पामे भवनो पार,
नव संदेह एमा आणशो रे।
जेनों शास्त्रमां छे घणी शाख-नमो नेह धरी०

राज्य आपी भरतने, लेने संयम भार,
वर्षि तपनुं कर्युं पारणुं, श्री श्रेयांस कुमार.
लेवे शेरडी रस प्रभु मूजनोरे।
रुडी अक्षय त्रीज मनोहार-नमो नेह धरी०

प्रथम जिनेश्वर आवीआ, पूर्व नवाणु वार,
रायण हेठे समोसरी, कीधो गीरि विस्तार,
सुणी भरत संघ साथे आवतारे!
तीरथ फरता ने करता उद्धार-नमो नेह धरी०

चैत्र शुदनी पुनमे, पाँच क्रोड मुनि साथ,
पुंडरीक गणधर ए गीरी, जान्यो शिव वधु हाथ,
एथी पुडरीकगिरी नाम स्थाप्योर !
इस तीरथपती आदिनाथ-नमो नेह धरी०

फागण शुदनी दशमे, नमी विनमी बे क्रोड;
अणसण करी शिवपुरी वर्या, साथे मुनि बे क्रोड;
सिद्ध थया पचीसे अणगारथी रे,
पाचें पांडव ए गिरिराज-नमो नेह धरी०

नेमी पुनी चोसठ कही, धरती आतप ठाम,
चैतर विदनी चौदशे, पामि अविचल धाम,
राम भरत मुनि त्रण क्रोड शुं रे,
कर्म कापी पाम्या सिद्धराज-नमो नेह धरी०

फागण उजळी तेरशे, श्याम प्रद्युम्न कहेवाय,
साडीआठ क्रोड मुनिवर, शत्रुंजय शिव पूजाय,
छेल्ला नारद एकाणु लाखथीरे,
गीरी उपर वरीया शिवनार-नमो नेह धरी०

गइ चोवीशीना प्रभु, बीजा नीरवाणी नाथ,
कदंब गणधर क्रोडशु, वरता मुक्तिने साथ;

तेने कदमगिरी नाम बोलतां रे,
जेना नामथी नवनिद्ध थाय–नमो नेह धरी०
एम असंख्या मुनिवरु, ए तीर्थ मोझार;
सिध्या ने वळी सिद्धशे, महिमा अपरंपार;
भाखे दान दया पन्यासनोरे,
शिष्य सौभाग्य विमल सुखकार–नमो नेह धरी०

(५)

मारुं मन मोह्यु रे श्रीसिद्धाचळे रे, देखीने हर्षित होय;
विधिशुं कीजे रे यात्रा एहनी रे, भवोभवनां दुःख जोय. मा०
पंचम आरेरे पावन कारणे रे, ए समो तीरथ न कोय,
मोटो महिमारे जगमा एहनोरे, आ भरते ईहां जोय. मा०
इण गीरी आव्यारे जिनवर गणधरारे, सिध्या साधु अनंत,
कठण कर्म पण ए गिरी फरसतांरे, होने करमनी शात. मा०
जैन धर्म ते साचो जाणीनेरे, मानव तीरथ ए स्थंभ;
सुरनर किन्नर नृप विद्याधरा रे, करंता नाटारंभ. मा०
धन्य धन्य दहाडोरे मन वेळा घडीरे, धरीए हृदय मोझार,
ज्ञान विमलसूरी, गुण एना घणारे, कहेतां नावे पार.
मारुं मन मोह्युं रे श्रीसिद्धाचळे रे, देखीने हर्षित होय,

(६)

विमलाचल वासी मारा वाला सेवकने
विसारो नहि, हुं विसारुं नहि,
जळ विना मीन दुःख अति पामे,
जिणंद आप जाणो सही आप जाणो सही.

दु'ख हरनारा भविजन प्यारा शरणे छुं महाराज,
चार चोर मुज पाछळ पडीआ पुण्य रत्नने काज,
प्रभुजी पुन्य रत्नने काज—सेवकने विसारो नहि०
पापी चंडालो पकडी मुज माल हरी लेनार,
प्रभुजी जो मुज वारे आवो तो छुं उगरनार,
प्रभुजी तो छु उगरनार-सेवकने विसारो नहि०
जन्म मरणना दुःख वेठ्यां बहु तोय न आव्यो पार,
तें दुःखने दूर करवा कारण आव्यो तुज दरबार.
प्रभुजी आव्यो तुज दरबार—सेवकने विसारो नहि०
अरजी उर धरी नेह नजर करी सेवकनी करो वार,
कृपातणाए सिंधु तुम विण कोण उतारे पार,
प्रभुजी कोण उतारे पार—सेवकने विसारो नहि०
भव भय भंजन नाथ निरंजन करो कठण कर्मनो नाश,
पद पंकज छे प्राण मधुकर पूरो मननी आश,
प्रभुजी पूरो मननी आश-सेवकने विसारो नहि०

(७)

एकेकुं डगलुं भरे, शत्रुंजय सामो जेह,
कवि कहे भव क्रोडना, कर्म खपावे तेह.
शेत्रुंजा समो तिरथ नहि, रिखव समो नहि देव;
गौतम सरखा गुरु नहि, वळी वळी वंदू तेह.
सिद्धाचळ समरु सदा, सोरठ देश मोझार,
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदू वार हजार.
सोरठ देशमां संचर्यो, न चढयो गढ गिरनार,
शेत्रुंजी नदी नाह्यो नहि, तेनो एळे गयो अवतार.
शेत्रुंजी नदीमां नाइने, मुख बांधी मुखकोश,
देव जुगादीश पूजीए, आणी मन संतोष.
जगमां तिरथ दो वडा, शेत्रुंजो गिरनार;
एक गढ रिखव समोसर्या, एक गढ नेमकुमार.
सिद्धाचळ सिद्धि वर्या, मुनिवर अनंति क्रोडी;
ज्यां मुनिवर मुगते गया, वंदू बे कर जोडी.
शत्रु-जय गिरि मंडणो, मरुदेवीनो नंद,
जुगलाधर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद.

१८

श्री रे सिद्धाचळ भेटवा, मुज मन अधिक उमायो,
रिखवदेव पूजा करी, लीजे भव तणो लावो- श्रीरे०
मणीमय मुरत श्रीरिखभनी, ते निपाये अभिराम,
भूवन कराव्या कनकना, राख्यां भरते नाम- श्रीरे०
नेम विना त्रेवीश प्रभु, आव्या सिद्धक्षेत्र जाणी,
शत्रुंजय समो तिरथ नहि, बोल्या सीमधर वाणी- श्रीरे०
पूर्व नवाणु समोसर्या, स्वामी रिखभ जिणन्द,
राम पाडव मुक्ते गया, पाम्या परमानद- श्रीरे०
पूर्व पुन्य पसायथी, पुंडरिकगिरि पायो,
कांतिविजय हरखे करी, श्री सिद्धाचळ गायो- श्रीरे०

१९

यात्रा नवाणु करीए विमलगीरी, यात्रा नवाणु करीए,
सहस क्रोड भव पातिक तूटे, शत्रुंजय सामो डग भरीये-
विमलगिरी-यात्रा नवाणु करीए
पूर्व नवाणु वार शत्रुंजयगिरी, रुषभ जिणद समोसरीए-
विमलगिरी-यात्रा नवाणु करीए

पुंडरिक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणुं करीए.
सात छट्ठ दोय अट्ठम तपस्या, करी चढीए शत्रुंजय–
विमलगिरी–यात्रा नवाणुं करीए.
पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीए, पाप पडल परिहरीए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणुं करीए.
भूमी संथारो ने नारी तणो संग, दूर थकी त्यागी दइए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणु करीए.
एकल आहारी ने सचित परिहारी, गुरु साथे पद चरीए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणु करीए.
कलिकाले ए तीरथ मोटुं, प्रवहण जेम भर दरीए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणु करीए.
उत्तम ए गिरीवर सेवंता, पद्म कहे भव तरीए–
विमलगिरी–यात्रा नवाणुं करीए

(१०)

तमे तो भले विराजोजी, सिद्धाचळके वासी
साहिब भले विराजोजी.
मरुदेवीनो नंदन रुडो, नाभि नरेन्द्र मल्हार,
जुगल्या धर्म निवारण आव्या, पूर्व नवाणु वार,
तमे तो भले विराजोजी.

मूल देरने सन्मुखं राजे, पुडरिक गणधार,
पंच क्रोडशु चैत्री पुनमे, वरीआ शिव वधु सार,
तमे तो भले निराजोजी.

सहप कोप दक्षीण विराजे, जिनवर सहस चोवीस,
चउदसें गणधरना पगला, पूजो गाम जगीश,
तमे तो भले विराजोजी.

प्रभु पगला रायण हठ, पूजी परमाणद,
अष्टापद चउवीश जिनेश्वर, समेत वीश जिणद.
तमे तो भले निराजोजी.

मेरु परवत चैत्य घणेरा, चउमुख बिंब अनेक,
वावन जिनालयना देवळ नीरखी इरख धरु अधिशेक,
तमे तो भले विराजोजी.

सहसफळाने शामळा पासजी, समोवसरण मंडाण,
जेपारसीने खडतर वासी, कइ प्रेमावसी परीमाण,
तमे तो भले निराजोजी.

सवत अ-ार ओगण पचाशे, फागण अष्टमी दीन,
उजवळ पक्षे उजवळ हूओ, गीरि फरस्या मुज मन,
तमे तो भले बिराजोजी.

इत्यादीक जिन बिंव नीहाळी, साभळी सिद्धनी श्रेण,
उत्तम गीरीवर कैनीपर वीसरे, पद्म विजय कहे जेण,
तमे तो भले विराजोजी.

७

(११)

भवजळ पार उतार जिणंदजी, भवजळ पार उतार,
मुज पापीने तार जिणंदजी, भवजळ पार उतार.
श्री सिद्धाचल तीरथ राजा, त्रण भुवनमा सार—जिनंदजी.
पूर्व नवाणुं वार सत्रु-जय, आव्या श्री नाभिकुमार— ,,
आज हमारे सुरतरु मगव्यो, दीठो प्रभु देदार— ,,
भवोभव भटकी शरणे आव्यो, राखो लाज आधार— ,,
भरतादिक असंख्यने तार्या, तेम प्रभु मुजने तार— ,,
माता मरुदेवीने दीधुं, केवळ ज्ञान उदार— ,,
क्षायक समकित मुजने आपो, एही ज परम आधार— ,,
दीन दयाळु दरिशन दीजे, पाय पडु वारंवार— ,,
अवसर पामी अरज सुणीने, चित्तवडी अवधार— ,,
नितीविजयना बाळ सिद्धिनी, आवागमन निवार—
जिणंदजी—भवजळ पार उतार

(१२)

जग जीवन जग वाल हो, मरुदेवीना नंद लालरे,
मुख दीठे ... अतिही आनंद लालरे-जग.

आखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशिसम भाल लालरे;
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे–जग०
लक्षण अंगे विराजता, अडहिय सहस उदार लालरे,
रेखाकर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे–जग०
इंद्र चंद्र रवी गिरीतणा, गुण लइ घडीयु अंग लालरे,
भाग्य किहांथकी आवीयु, अचरिज एह उत्तंग लालरे–जग०
गुण सघला अंगे कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे,
वाचक जशविजये कह्यो, देजो सुखनो सार लालरे– जग०

(१३)

आज आनंद अपार मुज मन, आज आनंद अपार,
मरदेवी नंदन कर्म निकंदन, निरख्या नाभिकुमार मु०
अजर अमर अकलंक जिनेश्वर, रुपस्वरुप भंडार. मु०
अशरण शरण करण जगनायक, दायक शिवसुख सार. मु०
तुम सेवा शुभ भावे करता, पामु भवनो पार. मु०
कहे जिनदास प्रभु दरिशनथी, सफळ थयो अवतार. मु०

॥ श्री रिखभदेव तथा श्री सिद्धाचळजीना स्तवन संपूर्ण ॥

श्री पार्श्वनाथप्रभुना स्तवन.

१४

आवो आवो पासजी मुज मळीया रे,
मारा मनना मनोरथ फळीया—आवो आवो—
तारी मूरती मोहनगारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे,
तमने मोही रह्या सुर-नर नारी—आवो आवो—
अलबेली मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा उपर जाउं वारी रे,
नाग नागणीनी जोड उगारी—आवो आवो—
धन्य धन्य देवाधिदेवा रे, नर नारी करे छे सेवा रे,
अमने आपोने शिवपुर जावा—आवो आवो—
तमे शिवरमणीना रसीया रे, जइ मोक्षपुरीमा वसीया रे,
मारा हृदय कमळमां ठसीया—आवो आवो—
जे कोई पार्श्व तणा गुण गाशे रे, भव भवनां पातीक जाशे रे,
तेना समकित निर्मळ थाशे—आवो आवो—
प्रभु त्रेवीसमा जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे,
अमने दरिशन दयोने दयाळा—आवो आवो—
हु तो लळी लळी लागु छुं पाय रे, मारा उरमा हरख न माय रे,
एम माणेकविजय गुण गाय—आवो आवो—

❁

१५

प्यारो प्यारो रे हो वाल्हा, मारा पासजिणंद मुने प्यारो।
तारो तारो रे वाला, मारा भवना दुखमा वारो,
काशीदेश वणारसी नगरी अश्वसेन कुळ सोहीएरे,
पासजिणदा वामानंदा मारा वाला, देखीत जन मन मोहीएरे
छप्पनदीग कुमरी मिलि आवे, प्रभुजीने हुलरावे रे,
थेइ थेइ नाच करे मारा वाला, हरसे जीनगुण गावे–प्यारो०
कमठ हठ गाल्यो प्रभु पार्श्वे, बळत उगार्यो फणी नागरे,
दीओ सार नवकार नागऊ, धरणेंद्र पद पायो–प्यारो०
दीक्षा लेइ प्रभु केवळ पायो, समवसरण में सुहायोरे,
दीयो मधुरी देशना प्रभु चौमुख धर्म सुणायोरे–प्यारो०
कर्म खपावी शीवपुर जावे, अजरामर पद पावेरे,
ज्ञान अमृतरस फळशे मारा वाला, ज्योतिसे ज्योत मिलावरे–

ॐ

१६

मन मोहन प्रभु पासजी, सुणो जगत आधारजी,
शरणें आव्यो रे प्रभु ताहरे मुज दुरित नीवारजी–मन०
विषय कषाय पासमा भम्यो काळ अनंतजी,
राग द्वेष महा चोलटालुटयो धर्मनो पथजी–मन०
पण कांइ पूरव पुन्यथी मळीया श्री जीनराजजी.
भवसमुद्रमां बुडता आ‍ऽलंबन जीम लालजी–मन०
कमठे निज अज्ञानथी उपसर्ग कीधो बहु जातजी,
ध्यानानल प्रगटावीने कीधो कर्मनो घातजी–मन०
केवळ ज्ञानथी देखीयुं लोकालोक स्वरुपजी,
विजय मुक्ति पद जइ वर्यु सादी अनंत शीव रुपजी–मन०
ते पद पामवा चाहतो मोहन कमळनो दासजी,
मनमोहन प्रभु माहरी पुरजो मननीआशजी–मन०

१७

बलीहारी जिनजी जाउ वारी प्रभु पार्श्व आपो अमने,
काशीना वाशी शीवतणा सुखनेजी.
नाग उगारी व्हाला नागेंद्र बनाव्योजी,
आप्युं छे, सुख अपारी–प्रभु पार्श्व०

चउमुख आपे व्हाला देशना देइनेजी,
तार्यां छे नरने नारी–प्रभु पार्श्व०
एवु सुणीने व्हाला शरणे तो आवीयाजी,
आपोने पद आणाहारी–प्रभु पार्श्व०
कर्म खपावी आपे शीवसुख लीधुंजी,
बनी गया छो निराकारी–प्रभु पार्श्व० ।
तुज प्रतीमा ते वहाली जाणी जाणी तुम सारीखीजी,
मागीए मोक्ष आगारी–प्रभु पार्श्व०
सेवक कहे छे प्रभु पार्श्व जीनेश्वरजी,
वीनंती लेजोने अवधारी–प्रभु पार्श्व

१८

राता जेवा फुलडा ने शामळ जेवो रंग,
आज तारी आगीनो थाइ अजब बन्यो छे ढग;
प्यारा पासजी हो लाल दिनदयाल मने नयणे निहाल-
जोगीवाडे जागतो ने मातो धींगड मल्ल,
शामळो सोहामणो ने जीत्या आठे मल्ल;
तु छे मारो साहेबो ने हु छुं तारो दास,
आश पूरो दासनी मारी सांभळी अरदास;

प्यारा पासजी हो लाल दिनदयाळ मने नयणे निहाल.
देव सघळा दीठा तेमा एक तुं अव्वल,
लाखेणु छे लटकुं तारुं देखी रीझे दल,
कोइ नमे पीरने ने कोइ नमे राम,
उदय रत्न कहे रे प्रभु माहरे तुमशु काम,
प्यारा पासजी हो लाल दिनदयाळ मने नयणे निहाल.

१९

समरण करिये भवजळ तरिये, नावज्यु नर भव तरिये रे, समरण करिये रे ॥ समरण करता केई नर शिवपुर, सुखिया होई सिधाया रे। इन्द्र इन्द्राणी मिले मोतीडे, वाटे वधाया रे ॥ स० ॥ १ ॥ एवा भोग पार्श्व प्रभु का, समरण है सुखदाई रे। तीन करणथी वरणव करता, कमी नही काई रे ॥ स० ॥ २ ॥ तीन भुवन मे नहीं प्रभु तोले, ज्ञानी वचन इम बोले रे। उमेद करी आराधो भविया मोघे मोले रे ॥स०॥३॥

२०

साहरा चिंतामणी पार्श, पूरो मनडानी आश ॥ टेक ॥
आज अनोपम उगत दर्शन, सुखडो स्वामी तमारो। देखत ही मोरो हियडो हरखित, नेह वध्यो वधी नेणे निरखित. सा०॥१

स्वामी तुमारे शरण हु आयो; कठण करम को मटीजे दावो ।
पुन्य पसाये में दरिशण पायो, काज करीजे मेरे मन चाह्यो. ॥सा॥ २
नहीं मागु हाथी घोडा गढ किल्ला, मागुं हु एक आपो सिद्ध शिला ।
और न मागु प्रभु तारे पास, आपसे अलगो रेहे किम दास. ॥सा०॥३
अम सम दीन अनाथने तारो, महेर करो कारज मारो ।
अब मोये दोष न आवत दूजो, मुखडे बोलो खोलो मंन गूंजा ॥सा०४
तरन तारन तमे जिनग तारो, मन लाग्यो तुज चरणे अमारो ।
शिवपुर मेलो वाह्य ग्रहीने, भक्तजनने अवश्य करीने ॥सा०॥५॥

२१

तुज विण ना सजे रे, पारम प्राण आधार । दरिशण दीजिये रे, अरजी वार हजार ॥ टेक ॥ चौसठ इन्द्र तणो तु नायक, सर्व गुणें करी भरियो । तीन भुवनरो नाथ प्रभु थें, अविनाशी पद वरियो ॥ तु० ॥ १ ॥ सुमता को संग रग भर राखो, कुमता काने टालो । हुं छु प्रभु चरणारो चाकर, क्षणभर साम्हु भालो ॥ तु० ॥ २ ॥ किरपा मुजपर कर केशरिया, मन रम म्हेल पधारो । कर्म आठइ दुर करीने,

-सब ही काम सुधारो ॥ तु० ॥ ३ ॥ जळ विना किम रहे, माछली, गाय विना वाछरियो । सद्गुरु विण प्रभु कुण, ओलखावे, काल अनंता फरियो ॥ तु० ॥ ४ ॥ छिण छिण में जिनवर समरंता, उमेद घणी मन आवे । एसो अरज परवानो आपो, तुज दरिशन नित पावे० ॥ तु० ॥ ५ ॥

२२

तुम तीन भुवनरा नाथ, वंदुं रे हुं तो नित्य उठी परभात ॥ टेर ॥ तरण तारण तुमे अंतरयामी, वसिया हृदे दिनरात ॥ वं० ॥ १ ॥ आगेही तुम अनेक उधारया, सेवकने ही लेजोरे साथ ॥ वं० ॥ २ ॥ स्वामि तुमारे शरणे हुं आव्यो, अलगो करो उतपात ॥ वं० ॥ ३ ॥ क्या करुं अरजी तमे सहु जाणो, मारा मनडारी हो वात ॥ वं० ॥४॥ अनेक मागलिक उमेद से गुणतां, परगट पारसनाथ ॥ वं० ॥ ५ ॥

२३

अर्हत मुखथी उपनी, समरुं वा सरसत देव । प्रेमसुं प्रणमु पासजी, चाहुं चरणारी सेव ॥ १ ॥ भव दरियो तरवा भलो,

भाग्य मल्यो भगवंत । पूरव पुन्य पामियो, तरवा मारग तत ॥ २ ॥ निरखवा नेन तैयारी थया, हियडो आणे हेज। दिल अरजी वलि युं करे, चाहु शिव वधु सेज ॥ ३ ॥ सुग्व अनन्ता त्यां सुण्या, गुरगम वाणी गरथ । चतुर भाणी फेड समझके ध्यानसु हियडे धरत ॥ ४ ॥

७

२८

पुन्य जोग में पामिया, प्रभु - दिलभर दरिशन आज । काज सिद्धि मुख सपजे, महेर कीनो हो महाराज । नेहसु नेणे निरखिआ, मारे- हियडे हुंश घणी । में तो मारे ठेठसु धारया गोडी पास धणी ॥ १ ॥ आज - फल्यो मारे सुरतर भेटयो, तीन भुवन केरो नाथ । वण दिन जो में पास हुतो, तो चाड पकड चढ जात। । शहेर सेंसली सोहामणी, सोहे सुरत सात फणी ॥ में० ॥ २ ॥ नील वरण मोरो नाथजी, शशि सम चलकत भाऊ । शरणे आयानी साथ करे, प्रभु पूरण छे प्रतिपाल । कटे निकाचित कर्म ध्याता, मुज मा आश घणी ॥ में० ॥ ३ ॥ कारे कुडल चलके जोणे, झलक रह्यो छे भाण । दीठा दिल हरख घणो वधता, किया

न जाय बखाण । अलबेला न आगी तणी, छद सोहे हीरकणी ॥ मे०॥ भमतां चौराशी भेट्यो मोरो, जगपति जिनवर एह। दुःख तणो मूल दाझीयो मारे, वरस्यो अमृत मेह । सेवक ने सेवा-शाश्वती, दीजे तोरा चरण तणी ॥ मे० ॥ ५ ॥

२८

इन्द्र ने चन्द्र धरणेन्द्र वलि सेवतां, देवता केइ कोडा न कोडी। हाथ जोडी रहे आज्ञा वली शिर वहे, मुख कहे जय जय पार्श्व गोडी ॥ इं० ॥ १ चौदेही राज छानो नहीं आपसे, सही तुज समरता सुक्ख पावे। तत्काल तुजने संभारतां ते समे, जादवांनी जरा दूर जावे ॥ ई० ॥ २ ॥ जग धणी आश पूरो प्रभु अम तणी, आज हु थारे दरबार आयो। किपारा ही काज सिद्धि किया में पिण, पूर्वेला पुन्यरे उदय पायो ॥ इ० ॥ ३ ॥ दुःख दूरे करो वलि भव नवि फिरे, इच्छा सुजन मन वंछित मेला। उमेद वणी गुण गावतां ते नरा, रे सुख पावता कांइ वेला ॥ इ० ॥ ४ ॥

२६

सुखकारी बलिहारी थारा मुखडारी, वारी जाउं सुख पाउं नित्य आज जिनराज। चरणे आयाने स्वामी दीजिये,

कीजिये वांछित काज जिनराज ॥ सु० ॥ किरपा किजो दीनों मुजरो आनि मुख साज काने कुंडल दोनु झगमगे। शरणे आयानी राखे लाज जिनराज ॥ सु० ॥ २ ॥ देखावो शिवपुर शहर करी म्हेर, आप दरशन की लगी मन में, जिन में देखावे तु तो आज जिनराज ॥ सु० ॥ ३ ॥ दीजिये मुज शिर हाथ मारा नाथ, रात दिवस जप रखो तुजने। मुजने छुडावो पापी पाज जिनराज ॥ सु० ॥ ४ ॥ अर्ज करे छे सेवक टालो खेद, छेदन करो मत पापने आपने, कहु इण काज जिनराज ॥ सु० ॥ ६ ॥

२७

पारसप्रभु वीनतडी अवधारो, भवसायर पार उतारो ॥ पा० ॥ टेर ॥ तीन भुवनरो तुम छो नायक, मुज मन तुज आधारो। देव दुजो नहि मोरे कोइ, शिवपुर काज सुधारो ॥ पा० ॥ १ ॥ खिण में कर्म खपे समरण से, एवो अतिशय थारो। नाम लियो नव निधि प्रगटे, धन्य आजनो दहाडो ॥ पा० ॥ २ ॥ सेवक अर्ज करे कर जोडी, मेटिजे भव दुःख भारो। करणी मारी कोइ मत देखो, विरुद विचारो थारो ॥

२८

मुजपर तो कृपा करीजे, पारस प्रभु दरिसण नित्य का दीजे ॥ टेक ॥ चौराशी भमता आयो छुं सरणे, मुजरो मानीज लीजे । आवागमन भारी अलग करीने, जन्म मरण मेटीजे ॥ पा० ॥ १ ॥ समरण तारो सदा सुखदाई, कल्पवृक्ष तुं कहीजे । शरणे आयो, केइ सुख पाया, भविजन सुणता हीं भींजे ॥ पा० ॥ २ ॥ उमेद धणी प्रभु मारे मनमें, चरण चाकरी दीजे । पर उपकारी पार उतारो, भजमां भंगु नहीं बीजे ॥ पा० ॥ ३ ॥

२९

प्रभु पास जिनंद, आनन्द सहुने आवे नयणे देखता । सेवे चौसठ इन्द्र, गुण गावे पाछे पार न पावे लेखता ॥ टेक ॥ धन्य घडी धन्य हे दारो, मुखं दीठो साहिनजी तारो, आज जनम सफल हुवा जे मारो ॥ प्र० ॥ १ ॥ त्रिभुवने शोभा छे तारी, एक अरजी सुण लीजें मारी, प्रभु कही न जाय गत करमारी ॥ प्र० ॥ २ ॥ करमे वश मुजने फेर लीनो, केइ केइ परकार दु:ख दीनो [illegible] शरणो तारो लीनो ॥ प्र०

मनवंछित कारज सिध कीजे, प्रभु तरण तारण हुं केवीजे, करुणा करी शिवसुख देवींजे ॥ म० ॥ ४ ॥ प्रभु तुज विण आशा कुण पूरे, केइ कालनी चिंता चुण-चूरे, अब तो नहीं रहुं तुमसे दुरे ॥ म० ॥ ५ ॥ प्रभु थारा बिरुद तो तु जोवे, तारी वाणी सुर नर सहु मोवे, प्यारा केइ पाप मोटा धोवे ॥

३०

पार्सनाथ नमिये जप तस करिये,
दुरित अमारा टल जाय जाय जाय ॥ आकणी ॥
कृपा अमृत रस सिंधु प्रभुने,
निरखत चित्त मोद पाय पाय पाय । पार्सनाथ० ॥ १ ॥
शशी किरण सम प्रभुना सद्‌गुण,
स्मरत आय निज माय मांय माय । पार्सनाथ० ॥ २ ॥
रत्नना धारक मोहना वारक,
भजता जिनदा आधि जाय जाय जाय । पार्सनाथ० ॥ ३ ॥
सहु मिथ्या तम हरे जन हृदयनु,
सब आशा पूरे जिन राय राय राय । पार्सनाथ० ॥ ४ ॥
मनहर अंगी प्रभुजीनी जोई,

उलसित हो चित्त, माय माय मांय। पासनाथ० ॥ ५ ॥
पदकज नमता पास प्रभुना,
विजय सौभाग्य सुख थाय थाय थाय। पासनाथ० ॥ ६ ॥

३१

पार्श्वनाथ सुखकारा सुखकारा जिन पति पूजो भावसे ॥आं०॥
ज्ञान अनंत के है प्रभु धारी, कर्म रोग सब दूर निवारी,
सूरज परे तेजधारा तेजधारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
भव समुद्रमें पडते को राखे, शुद्ध मारग प्रभुजी नित दाखे,
करे जगत उपकारा उपकारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
कमठ हठीको दूर निवारा, तत्व बताके छिन में उगारा,
अहो दयाके प्रभूधारा प्रभूधारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
पार्श्व यक्षसेपूजित पाया,पद्मावती धरणेन्द्रको भाया,
वंदो ऐसे प्रभुप्यारा प्रभूप्यारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
एक ही चित्तें नाथ पूजन से, वार वार फिर ध्यान करन से,
होवे करम छुटकारा छुटकारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
महाप्रभावी है इस युगमें, पूरे मनोग्य सारे छिन में,
वंदे सौभाग्य नेहधारा नेहधारा ॥ जिनपति पूजो भावसें ॥
श्री पार्श्वनायजीनां स्तवन संपूर्ण.

॥ श्री महावीर स्वामीनां स्तवन ॥

३२

त्रिशलाना जायारे, शरणे अमे आव्यारे,
सुणो एक विनंती होजी
महेर करीने भवजळ पार उतारो.
त्रिशलाना जायारे, शरणे अमे आव्यारे,
सुणो एक विनति होजी.

(साखी)

लाख चोराशी योनीमा भ्रमण कर्युं भगवान,
अन्य मतोमा राचीओ नडयु बहु अज्ञान;
पाम्यो कुडी कायारे-सुणो एक-त्रिशलाना०

(साखी)

सद्गुरुना उपदेशथी, जाण्यो तारो मर्म,
एक चित्तथी आदरी, हवे खपाउ कर्म,
छोडु सघळी मायारे-सुणो एक-त्रिशलाना०

(साखी)

श्रेणिकादिक भक्तने जिनपद दीधु जेम,
सेवक कहे छे आपजो, मने पण प्रभुजी तेम,
गुण तमारा गाउंरे-सुणो एक-त्रिशलाना०

(साखी)

आनंदादिक श्रावको, वृत्त उच्चरता जेम,
शिव रमणीने साधवा, हुं पण करीश तेम,
हुं छुं तारो बाळक-सुणो एक विनंती होजी.
त्रिशलाना जायारे, शरणे अमे आव्यार,
सुणो एक विनंती होजी.

३३

व्हाला वीर जिनेश्वर जन्म जरा निवारजोरे,
प्यारा प्रभुजी प्रीते मुज शीर पर कर स्थापजोरे
व्हाला वीर जिनेश्वर जन्म जरा निवारजोर.
त्रण रत्न आपो प्रभु मुजने, खोट खजानो को नहि तुजने,
अरजी उरधरी कर्म कटक संहारजोरे- व्हाला०
कुमति डाकण वळगी मुजने, नमीनमी विनवु हे प्रभु तुजने,
ए दुःखने दुर करवा व्हेला आवजोरे- व्हाला०
भव अटवीमां भूलो पडीयो, हुं महावीर साचो मने मळीओ;
सेवकने शिवपुरनी सडक देखाडजोरे- व्हाला०

सिद्धारथनार नंदन विनवु, विनवटी
भवमंडपमार नाटक नाचीओ, हवे मने पा
नग रत्न शुभ आपो तातनी, जेमा नाटर
दान दीपनार मझुनी पूनथुं, आपो प्र—
चरण अगुठेर मर कंपावीयो, सुरनु मोह
अट कर्मना मगडा जीवता, दीधुं वर
शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला
सिद्धारथनो वन दीपावीयो, मझुनी ह

॥

अघ हरनारा सुख करनारा निरखी तुज मुख चंद ।
चित्तदु आ मुज स्थिरता पाम्युं,विकस्यो प्रेमअमंद॥नेह धरी०॥४॥
कर युग जोडी प्रभु तुम आगे इच्छु तुम पद राग ।
ते मुज प्रभुजी वेगे आपो विनवे धम सौभाग ॥ नेहधरी० ॥५॥

७

३६

दयालु वीर जिन-स्वामी, करु मैं अर्ज शिरनामी ।
सिद्धारथ राजके घरमें, लिया प्रभु जन्म सुखकारी ।
हुवा उजियार सबजगमें,खिली ज्यु शांति अतिभारी॥दयालु० १
अनंती शक्ति के धारक, प्रभुजी बाल्पन धारी ।
अगुठे लाख योजनका, कपाया मेरगिरि भारी ॥दयालु० २
भयकर देव तुम पासे, आमलकी क्रीडमें आया ।
दया कर वज्रमुष्टिसे, उसीको दास सम पाया ॥दयालु० ३
उसी से नाथ तुम हीया, देवोसे वीर इति नामा ।
गावे ज्युं नाथ तुम केरा गुणोंको नित्य सुररामा॥दयालु० ४
विहरके नाथ दुनियामें, किये हैं क्रोड उपकारा ।
असतपथ गामि लोकोको दिया है बोध तुम सारा॥दयालु० ५

३४

सिद्धारथनारे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार,
भवमंडपमारे नाटक नाचीओ, हवे मने पार उतार-सि०
त्रण रत्न मुज आपो तातजी, जेम नावेरे संताप,
दान दीयतारे प्रभुजी पुजशु, आपो पदवीरे आप-सि०
चरण अंगुठेरे मेर कपावीयो, सुरनु मोड्युर मान,
अष्ट रमंना झगडा जीतवा, दीधु वरसीरे दान-सि०
शासन नायक शिवसुख दायक, त्रिशला कुखे रतन,
सिद्धारथनो वंश दीपावीयो, प्रभुजी तमने धन्य धन्य-सि०

३५

त्रिशला सुत स्वामी मेरा प्यारा नेह धरी निहाळो मुने ।
तुम विना मारे चित्त प्रभु होवे उदास एम दाख्युं तुने ॥
त्रिभुवन नायक भवदुःख भंजक सेवकना प्रतिपाल ।
कृपा करी मने शरणे राखो, आपो सुख रसाल ॥नेहधरी०॥१॥
भव भय वारक शिव सुख दायक सविजन तारणहार ।
दया सुधारस मुजपर सिंची, करीये सेवक सार ॥नेहधरी०॥२॥
गोशालक जेवा सन्मुख भाषी ते पर करुणा धार ।
तो तुम आणा धारक मुजने, नाहीं केम उगार ॥नेहधरी०॥३॥

अघ हरनारा सुख करनारा निरखी तुज मुख चंद।
चित्तडु आ मुज स्थिरता पाम्युं, विकस्यो प्रेमअमद॥नेह धरी०॥४॥
कर युग जोडी प्रभु तुम आगे इच्छु तुम पद राग।
ते मुज प्रभुजी वेगे आपो विनवे प्रेम सौभाग ॥ नेहधरी० ॥५॥

३६

दयालु वीर जिन स्वामी, करु मैं अर्ज शिरनामी।
सिद्धारथ राजके घरमें, लिया प्रभु जन्म सुखकारी।
हुवा उजियार सजजगमें, खिली ज्यु शांति अतिभारी॥दयालु० १
अनंती शक्ति के धारक, प्रभुजी बाल्पन धारी।
अंगुठे लाख योजनका, कंपाया मेरगिरि भारी ॥दयालु० २
भयकर देव तुम पासे, आमलकी क्रीडमें आया।
दया कर वज्रमुष्टिसे, उसीको दास सम पाया ॥दयालु० ३
डर्सो से नाथ तुम होया, देवोसे वीर इति नामा।
गावे ज्यु नाथ तुम केरा गुणोको नित्य सुरगामा॥दयालु० ४
विहरके नाथ दुनियामें, किये हैं क्रोड उपकारा।
असत्पथ गामि लोकोंको दिया है बोध तुम सारा॥दयालु०५

३८

त्रिशलाना जायारे महावीर व्हाये आवजोजी,
नहिं आवो तो थाशे सेवकना बेहाल- त्रिशलाना. १
दैत्य महामोहरे व्हाला लाग्यो पीडवाजी,
दीधां दुःख कहेतां न आवे पार- त्रिशलाना. २
कामने अज्ञानेरे सचा नीज वापरीजी
वाळे क्रोध घडी घडी क्षण मांहि- त्रिशलाना. ३
पन्थ पाखण्ड जाळेरे वीटायो छुं वेगथीजी,
विकार विषधरनी लागीरे चोट- त्रिशलाना. ४
पंचम काळ पूरो रे जम जेवो बेसियोजी,
सूझे नहि धर्म मार्गनीरे रीत- त्रिशलाना. ५
गांडो घेलो व्हारोरे सेवक व्हाला मानीनेजी,
तारो तारो भवसागरनी तीर- त्रिशलाना. ६
टळवळतो तारो व्हाल्यारे सेवक हाथ झालीनेजी,
नहिं तारो तो जाशे तमारी लाज- त्रिशलाना. ७
तुहि तुहि समरुंरे दुःखीनो बेली आवजेजी,
शरण एक बुद्धिसागरने छे तुज- त्रिशलाना. ८

३९

वीर हु जेवो तेवो पण ह्हारो, मने रझने पार उतारो–वीर हु.
जोग ध्यानने जप तप तिरथ, नाथ नथीरे नीपजता,
मनडु पापी मारे कुत्का, भगवत तुजने भजता–वीर हु.
मध्य दरिये जीव मच्छ मुंझाणो, तृष्णाने नथी तजतो,
सामु भाळे काळ खडो पण, नफट नथी काइ समजतो–वीर हु.
अतरनी दुग्धाने ठारे, तन मन व्यासी टाळे,
देव दयानिधि नवीन पापीने, आप विना कोण तारे–वीर हु.

४०

मने तो मळीओ मारो वीर, पूर्वना पुन्य प्रमाणे रे–म०
प्रीति अनादीनी, भूली गया छो स्वामी,
हवे नहि छोडु तारो साथ, छोडु नहि कदापीरे म०
अनादि काळनो हु, रखडु छु जिनजीरे,
भ्रमण करं चु गति चार, दु ख बहु तेथी पामुरे–म०
हवे तमे मळीआ स्वामी, दु'ख अमारु कापो
आपोने शिव रमणीनो साथ, आपो प्रीत करीनेरे–म०
सुल्सादिक नमने आपे, जिनपद दीधु व्हाला,
चदनबाळानु काप्यु दु'ख, तेम अमारु कापोरे–म०
त्रिशलाना नदन जिनजी, विनती अवधारो व्हाला,
प्रीतथी खेंची ल्योने हाथ, नाथ में तमने धार्यारे–म०
सेवक कहे छे व्हाला, वीर प्रभुना गुण गावाथी,
तरीए आ ससार, वात छे तेहज साचीरे–मने तो०

४१

चोंमासी पारणु आवे, करी विनती निज घर जावे,
मिया पुत्रने वात जणावे, पटकुल जरी पथरावेरे,
महावीर प्रभु घेर आवे, जीर्ण शेठजी भावना भावेरे- म०
उभी सेरीए जळ छंटकावे, जाइ केतकी फुल विछावे,
निज घर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाळ भरावे रे- म०
अरिहाने दानज दीजे, देता जे देखीने रिझे,
खटमासी रोग हरीजे, सीजे दायक भव त्रीजे रे- म०
जिनवरनी सन्मुख जावुं, मुज मंदिरीए पधरावुं,
पारणुं भली भाते करावु, युगते जिन पूजा रचावुं रे- म०
पछी प्रभुने वोरावा जइशु, करजोडीने सन्मुख रहीशुं,
नमी वंदीने पावन थइशु, वीरती अति रंग वरीशु रे- म०
दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशु,
सत्य ज्ञान दिशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशु रे- म०
एम जीर्ण शेठ वदता, परिणामनी धारे चढता,
श्रावकनी सीमे ठरता, देव दुंदुंभिनाद सुणंता रे- म०
करी आयु पूर्ण शुभ भावे, शूरलोक अच्युत जावे,
शाता वेदनी सुख पावे, शुभ वीर वचन रस गावे रे- म०

८२

रायरे सिद्धारथ घर पट्टराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणी ए.
राजभुवनमां पलंगे पोढता, चौद स्वप्न राणीए लह्या ए.
पहेले स्वप्ने गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणु ए,
त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे महालक्ष्मी देवी ए,
पाचमे पाच वर्णनी माळा, छठे चंद्र अमीअ झरे ए,
सातमे सुरज, आठमे ध्वजा, नवमे कलश अमीअ भर्यो ए.
पद्म सरोवर दशमे दीठो, खीर समुद्र दीठो अग्यारमे ए
देव विमान ते बारमे दीठो, रणझण घंटा वागता ए,
रत्ननो राशि ते तेरमे दीठो, अग्निशिखा दीठी चौदमे ए.
चौद स्वप्न लइ राणीजी जाग्यां, राय समोरड पहोतला ए
शुणोरे स्वामी में तो स्वप्ना लाधा, पाछली रात रळीआमणी ए.
रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहोरे पंडित फळ एहनु ए
अमकुलमंडण तुमकुळदीवो, धन्यरे महावीरस्वामी अवतर्या ए.
जे कोइ गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणा ए.

८३

आवो आवो जसोदाना कंत, अम घेर आवोरे,
प्रभु भक्ति वत्सल भगवंत, नाथ शे नावो रे,
एम चंदनबाळाने बोलडे, प्रभु आवी रे,
प्रभु बाकुल भाटे पाछा, वळी बोलावीरे-आवो०

संकेत करीने स्वामी, गया तमे वनमां रे;
थइ केवळी केवळी कीध, धरीजो मनमां रे,
एम केमर केरा कीच, करीने पूजुं रे;
तोय पहेले व्रत्त अतिचार, थकी हुं ध्रुजुंरे—आवो०
जीवहिंसाना पच्चखाण, थूलथी करीए रे,
दुविहं तिविहंनो पाठ, सदा अनुसरीए रे,
वासी वोलो विदल निशि भत्त, हिंसा टाळुं रे,
सर्व विश्व केरी जीव दया, नित्य पाळुं रे—आवो०
दश चंदरवा दश ठाम, बांधीने रहीए रे,
जीव जाए एहवी वात, कोने न कहीए रे,
वध वंधनने छवीच्छेद, भार न भरीए रे;
घास पाणीनो विच्छेद, पशुने न करीए रे—आवो०
लौकिक देव गुरु मिथ्यात्व, नेआशी भेदे रे,
तुम आगम सुणता आज, होय विच्छेदे रे;
चौमासे पण बहु काज, जयणा पाळु रे;
पगले पगले महाराज, त्रच अजवाळुं रे—आवो०
एक श्वाम माहीं सो वार, समरुं तमने रे;
चदनवाळा ज्युं सार, आपो अमने रे;
माळी हरीनळ फळदाय, ए व्रत्त पाळी रे;
शुभवीर चरण सुपसाय, नित्य दीवाळी रे—आवो०

४४

वीर जिन राज गुण आगरा, नमो मन धरि प्रेम रे।
आधि सकल तिम वारीने, लहो मन बहु खेम रे॥ वीर०॥
घातिया कर्मने वारिने, मेलव्यु केवल ज्ञान रे।
चोसठ सुर मली तेहना, करे नाथ गुणगान रे ॥ वीर०॥
वाल निर्वाण निज जाणीने, आविया नयरी अप पा रे।
कार्तिकनी अमावाशीयें गया मोक्ष दु ख सवि काप.रे ॥वीर०
भाव उद्योत जाते थके, द्रव्य उद्योत ने काज रे।
ते दिने करि दीपालीका, ध्याइया वीर जिनराज रे॥वीर॥
एहीज पर्व आवे थके, धरो वीर प्रभुजीनुं ध्यान रे।
गौतम स्वामी तिम ध्याइए, लहो सौभाग्य निधानरे ॥वीर॥

४५

तार प्रभु तार मुजने, तार दीनें दयालजी,
शरणे आव्यो प्रभु ताहर, मुज नयन निहाळजी. ता०
भव अटवी भमता थकां, दीठु दु ख अनंतजी,
भाग्य सजोगे भेटीआ, भवभंजन भगवंतजी. ता०
सिद्धारथ सुत वन्दीए, जगदानंदा आधारजी,
चौगति संकट चूरीए, वर्धान दान दातारजी. ता०
पण कोई पूर्व पुन्यथी, मलया श्री जिनराजजी;
भव समुद्रमा डुबता, आलंबन जेम जहाजजी. ता०

श्री महावीर स्वामीनां स्तवन संपूर्ण.

श्री मगल प्रभाती स्तवन.

४६

आजको लाहो लीजीए, काल कोणेरे दीठी,
रहेण न पावे पा घडी, जब आवे चिट्ठी. आ०
मनसा वाचा कायना, आळस सव छंडी,
ध्यान धरु अरिहंतनु, थानक शिर मंडी. आ०
विनय मूल जे पाळीए, श्री जिनवर धर्म,
भावे शुद्ध आराधतां, छुटे निज कृत कर्म. आ०
दान शीयळ तप भावना, ए चार प्रकार,
धर्मनो मर्म ए जाणजो, रागद्वेष निवारो. आ०
दया शुद्ध आराधीए, पामीए भव पार,
केवळज्ञान निपाइने, देवचंद्र पद सारो. आ०

४७

में परदेशी दूरका, प्रभु दर्शनकु आयो;
लाख चाराशी देश फर्यो, तेरा दर्शन पायो. में०
सूक्ष्म बादर निगोदमां, वनस्पति वसाया,
अप तेउ वाउ कायमां, काल अनंता गमाया. में०
स्वर्ग नरक तिर्यंच मा, केता जन्म गमाया;
मनुष्य अनार्य में भम्या, त्या नहि दर्शन पाया. में०
तेरो दर्शन मरे जब भयो, पूर्ण पुन्य पसाया,
रुपचंद कहे भाग्य रुडे, निरंजन गुण गाया. में०

३८

रे जीव जिन धर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार,
दान शीयळ तप भावना, जगमां एह्नु सार. रे०
वरस दिवसने पारणे, आदीश्वर सुखकार,
शेरडी रस वोरावीयो, श्री श्रेयांस कुमार. रे०
चंपा पोळ उघाडवा, चारणीए काढया नीर,
सतीय सुभद्रा जस थयो, शीयले सुरनर धीर रे०
तप करी काया शोषवी, सरस नीरस आहार,
वीर जीणंद वखाणीओ धन धन्नो अणगार. रे०
अनित्य भावना भावता, धरता निर्मळ ध्यान,
भरत अरीसा भुवनमां, पाम्या केवल ज्ञान. रे०
जैन धर्म सुरतरु समो, जेहनी शीतल छाया,
समय सुंदर कहे सेवता, वंछित फल पाया रे०

४०

उठो उठोरे मोरा आतमराम, जिन मुख जोवा जइएरे,
प्रभुजीनो दरिशण छे अति दोहलो, ते किम सोहेलो जाणोरे,
वारवार मानव भव जेहवो, मलशे मुशकिल टाणोरे. उ०
चार दिवसनो चटको मटको, देखीने मत राचोरे,
विणसी जाता वार न लागे, काया घट छे काचोरे. उ०
हीरो हाथ अमुलख पायो, मूढपणे मत रमजोरे,
सहज सउगा पास जिणंदसुं, राजी थई चित रमजोरे उ०

अनंत गुणे करी भरिया जिनवर, पुरव पुण्ये पायोरे;
ते देखीने मारा मनमा, आनंद अधिक सोहायोरे ऊ०
मन गत मोरी आतमराम, करजो सुकृत कमाइरे,
लाभ उदय जिणचद लईने, वर्ते आनंद वधाइरे. ऊ०

श्री गौतम स्वामीना छंद

५०

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश,
जो कीजे गौतमनु ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान.
गौतम नामे गिरिवर चढे, मन वंछित हेला संपजे,
गौतम नामे न आवे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग.
जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुकडा,
भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमना करुं वखाण.
गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिन शासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार.
शाळ दाळ सुरहा घृत गोळ, मन वंछित कापड तंबोल,
घरे सुघरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत.
गौतम उग्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जगजाण,
मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफळ विहाण.
घर मयगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड,
महियल माने मोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय.

४८

रे जीव जिन धर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार,
दान शीयळ तप भावना, जगमा एटलु सार. रे०
वरस दिवसने पारणे, आदीश्वर सुखकार,
शेरडी रस वोरावीयो, श्री श्रेयास कुमार. रे०
चंपा पोळ उघाडवा, चारणीए काढया नीर,
सतीय शुभद्रा जस थयो, शीयले सुरनर धीर रे०
तप करी काया शोषवी, सरस नीरस आहार,
वीर जीणद वखाणीओ धन धन्नो अणगार. रे०
अनित्य भावना भावता, धरतां निर्मल ध्यान,
भरत अरीसा भुवनमा, पाम्या केवल ज्ञान. रे०
जैन धर्म सुरतर समो, जेहनी शीतल छाया,
समय सुंदर कहे सेवता, वांछित फल पाया. रे०

४९

उठो उठारे मोरा आतमराम, जिन मुख जोवा जइएरे,
प्रभुजीनो दरिशण छे अति दाहलो, ते किम सोहेलो जाणोरे,
वारंवार मानव भव जेहवो, मलवो मुशकिल टाणोरे ऊ०
चार दिवसनों चटको मटको, देखीने मन राचोरे,
विणसी जाता वार न लागे, काया धड ते काचोरे ऊ०
हीरो हाथ अमुलख पायो, मूरखपणे मत रमजोरे,
सहज सलुणा पास जिणंदसुं, राजी थई चित्त रमजोरे ऊ०

अनंत गुणे करी भरिया जिनवर, पुरव पुण्ये पायोरे,
ते देखीने मारा मनमा, आनंद अधिक सोहायोरे ऊ०
मन गत मोरी आतमराम, करजो सुकृत कमाइरे,
लाभ उदय जिणचद लईने, वर्ते आनंद वधाइरे. ऊ०

श्री गौतम स्वामीना छंद

५०

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश,
जो कीजे गौतमनु ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान.
गौतम नामे गिरिवर चढे, मन वंछित हेला संपजे,
गौतम नामे न आवे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग.
जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा,
भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमना करुं वखाण.
गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिन शासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार.
शाल दाल सुरहा घृत गोळ, मन वंछित कापड तंबोल,
घरे सुघरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत.
गौतम उग्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जगजाण,
मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफळ विहाण.
घर मयगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड,
महियल माने मोटा राय, जो तुठे गौतमना पाय.

गौतम मणम्या पातक टळे, उत्तम नरनीं संगत मळे,
गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान.
पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,
कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड.

५१

मात पृथ्वी सुत मात उठी नमुं, गणधरा गौतम नाम गेले,
महसमे प्रेमशु जेह ध्याता सदा, चडती कला होय वश वेले.
वसुभूति नंदना विश्वजन वंदना, दुरित निकंदना नाम जेनु,
अभेद बुद्धे करी भवीजन जे भजे, पूर्ण पहोंचे सही भाग्य तेनु.
सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतर, कामीत पूर्ण कामधेनु,
एह गौतमतणु ध्यान हृदये धर, जेथकी अधिक नहि महातम कोनु.
ज्ञान बळ तेजन सकळ सुख संपदा, गौतम नामथी सिद्धि पामि,
अखड प्रचड प्रताप होय अवनिमां, सुरनर जहन शिर नामि.
प्रणव आदे धरी माया बीजे करी, स्वमुखे गौतम नाम ध्यावे,
कोडी मन कामना सकळ वेगे फळ, विघ्न वैरी सवी दूर जावे
दुष्ट दूरे टळे स्वजन मेळो मळ, आधि उपाधिने व्याधि नाशे,
भूतना प्रेतना जोर भाजे वळी, गौतम नाम जपतां उल्लासे
तिर्थ अष्टापदे आप लब्धे जइ, पदरसें प्रणने दिक्षा दीधी,
अष्टमने पारणे तापस कारणे, खीर लब्धे करी अखूट कीधी.

वरस पचास लगे गृहवासे रह्या, वरस वळी त्रीश करी वीर सेवा;
बार वरसा लगे केवळ भोगव्युं, भक्ति जेहनी करे नित्य देवा.
गहीयल गौतम गौत्र महिमा निधि, रिद्धि ने सिद्धि सुख कीर्ति दाई;
उदय जश नामथी अधिक लीला लहे, सुजशसौभाग्य दोलत सवाइ

श्री सोळ सतीनां छद.

५२

आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफळ मनोरथ कीजीए ए;
प्रभाते उठी मंगलिक कामे, सोळ सतीनां नाम लीजीए ए.
बाळकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनडी ए,
घट घट व्यापक अक्षर रुपे, सोळ सती माहे जे वडी ए
बाहुबळ भगिनी सतीय शिरोमणी, सुन्दरी नामे ऋषभसुता ए,
अंक स्वरुपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए.
चंदनबाळा बाळपणाथी, शियळवती शुद्ध श्राविका ए,
अडदना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए.
उग्रसेन धूआ धारिणी नंदिनी, राजीमती नेमवल्लभा ए;
जोबन वेशे कामने जीत्यो, सजम लइ देवदुल्लभा ए.
पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया वखाणीए ए,
एकसो आठे चीर पूराणा, शीयळ महिमा तस जाणीए ए.

दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए,
शीयल सलुणी राम जनेता, पुण्यतणी परनालिका ए
कौशाम्बिक ठामे सतानीक नामे, राज्य करे रंग राजीयो ए;
तस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवने जश गाजीओ ए.
सुलसा साची शीयले न काची, राची नहीं विषया रसे ए,
मुखडुं जोता पाप पलाये, नाम लेतां मन उल्लसे ए.
राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सतीए;
जग सहु जाणे धीज करता, अनल शीतल थयो शीयलथी ए.
काचे तांतणे चालणी बांधी, कुवाथकी जल काढीउं ए,
कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए.
सुर नर वंदित शीयल अखंडित, शिवा शिवपदगामिनी ए,
जेहने नामे निर्मल थइए, बलिहारी तस नामनी ए.
हस्तीनापुर पांडुरायनी, कुंता नामे कामिनी ए;
पांडवमाता दशे दशारनी, बेन पतिव्रता पद्मीनि ए.
शीयलवती नामे शीलव्रतधारिणी, त्रिविध तेहने वंदिए ए,
नाम जपता पातक जाये, दरिसण दुरित निकंदिए ए.
निषधा नगरी नल नरेन्द्रनी, दमयंति तस गेहिनी ए,
संकट पडतां शियलज राख्युं, त्रिभुवनकीर्ति जेहनी ए.
अनंग अजीता जगजन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए,
विश्वविख्याता कामितदाता, सोलमी सती पद्मावती ए.
वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदयरत्न भाखे मुदा ए,
वहाणु वातां जे नर भणशे, ते लहेशे सुखसंपदा ए.

श्री बोधप्रद सज्झाय.

५३–क्रोधनी सज्झाय.

कडवा फळ छे क्रोधना, ज्ञानी एम बोले,
रीस तणो रस जाणीए, हळाहळ तोले. क०
क्रोधे क्रोड पूर्व तणुं, संजम फळ जाय,
क्रोध सहीत तप जे करे, ते तो लेखे न थाय. क०
साधु गणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग,
शिष्यने क्रोध थकी थयो, चंडकोशीयो नाग. क०
आग उठे जे घर थकी, पहेलु ते घर बाळे,
जळनो जोग जो नवि मळे, तो पासेनु परजाळे. क०
क्रोध तणी गति एहवी, कहे केवल नाणी,
हाण करे जे हेतनी, जाळवजो एम जाणी. क०
उदयरत्न कहे क्रोधने, काढजो गळे साही,
काया करजो निर्मळी, उपसम रस नाही. क०

५४–माननी सज्झाय.

रे जीव मान न कीजीये, माने विनय न आवेरे,
विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावेरे रे०
समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे,
मुक्तिना सुख छे शाश्वता, ते केम लहिये युक्तिरे. रे०

विनय वडो रे संसारमा गुणमा अधिकारीरे,
माने गुण जाये गली, प्राणी जोजो विचारीरे. रे०
मान कर्यु जो रावणे, ते तो रामे मार्योरे,
दुर्योधन गर्व करी, अंते सवि हार्यो रे. रे०
सुका लाकडा सरिखो दु खदायी ए खोटोरे,
उदय रत्न कहे मानने, देजो देशवटोरे. रे०

५९-मायानी सज्झाय.

समकितनु मूल जाणीयेजी, सत्य वचन साक्षात,
साचामा समकित वसेजी, कूडामां मिथ्यात्वरे प्राणी-
म करीश माया लगार.
मुख मीठो जुठो मनेजी, कूड कपटनारे कोट,
जीमे तो जीजी करेजी, चित्तमा ताके चोटरे प्राणी-म०
आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास,
मनशु राखे आंतरोजी, ए मायानो पास रे प्राणी-म०
जेहशु बांधे प्रीतडीजी, तेहशु रहे प्रतिकुल,
मेल न छडे मन तणोजी, ए मायानु मूल रे प्राणी-म०
तप कीधु माया करीजी, मित्रशु राख्यो र भेद,
मल्लि जिनेश्वर जाणजोजी, तो पाम्या स्त्री वेदर प्राणी-म०
उदयरत्न कहे सांभळोजी, मेलो मायानी बुद्ध,
मुक्ति पुरी जावा तणोजी, ए मारग छे शुद्धरे प्राणी-म०

५६–लोभनी सज्झाय.

लोभ न करीए प्राणीआरे, लोभ बूरो संसार;
लोभ समो जगमा नहींरे, दुर्गतिनो दातार,
भविकजन लोभ बूरो संसार०

करजो तुमे निरधार भविकजन, जेम पामो भवपार. भ०
अति लोभे लक्ष्मी पतिरे, सागर नामे शेठ,
पूर पयोनिधिमा पडयो रे, जइ बेठो तस हेठ भ०
सोवन मृगना लोभथी रे, दशरथ सुत श्री राम,
सीता नारी गमावी ने रे, भमीयो ठामो ठाम. भ०
दशमा गुण ठाणा लगरे, लोभ तणुं छे जोर,
शीवपुर जातां जीवने र, एहज मोटो चोर. भ०
क्रोध मान माया लोभथीरे, दुर्गति पावे जीव,
परवश पडीओ वापडो रे, अहोनिश पाडे रीव. भ०
परिग्रहनां परिहारथी रे, लहीए शिव सुख सार,
देव दानव नरपति थई रे, जाशे मुक्ति मोझार. भ०
भवसागर पंडित भणेरे, वीरसागर बुध शिष्य,
लोभ तणे त्यागे करीरे, पहोंचे सयल जगीश. भ०

श्री श्रावक करणीनी सज्झाय

५७

श्रावक तु उठे प्रभात, चार घडी ले पाछली रात,
मनमा समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार.
कवण देव, कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं छे कुल कर्म,
कवण अमारु जे व्यवसाय, एवु चिंतवजे मनमांय.
सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध;
पडिक्कमणु करे रयणी तणुं, पातक आलोइ आपणु.
काया शक्ते करे पच्चक्खाण, शुद्धि पाळे जिननीआण,
भणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिण हुति निस्तारो थाय.
निर्धार नित्य चौदे नियम, पाळे दया जीवता सीम,
मंदिरे जइ जुहारे देव, द्रव्य भावथी करजे सेव.
पूजा करता लाभ अपार, प्रभुजी मोटा मुक्ति दातार,
जे उथापे जिनवर आण, तेहने लागे पातक खाण.
पोशाले गुरु वंदने जाय, सुणजे वखाण सदा चित्त लाय,
निर्दुषण सुजतो आहार, साधुने देजे सुविचार.
स्वामी वत्सल करजे घणु, सगपण मोटु सामी तणुं,
दु:खीआ हीणा दिनने देख, करजे तास दया सविशेष,

घर अनुसारे देजे दान, मोटा शुं म करे अभिमान;
गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी.
वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार,
म भरजे केनी कुडी शाख, कुडा जन शुं कथन म भाख.
अनतकाय कही बत्रीश, अभक्ष्य बावीश विश्वावीस,
ते भक्षण नवि कीजे केमे, काचा कुडा फल मत जिमे.
रात्री भोजननां बहु दोष, जाणीने करजे संतोष,
साजी साबु लोहने गळी, मधु धावडी मत वेचो वळी.
वळी म करावे रंगण पास, दूपण घणां कह्यां छे तास;
पाणी गळजे बब्बे वार, अणगळ पीता दोष अपार.
जीवाणीना करजे यत्न, पातक छंडी करजे पून्य,
छाणा इंधण चूलो जोय, वापरजे जेम पाप न होय.
घृतनी परे वावरजे नीर, अणगळ नीर म धोइश चीर;
पालजे शुद्ध मने व्रत बार, टाळजे सघळा पाप अतिचार.
कह्यां पदरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण,
माथे म लेजे अनर्थ दंड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड
समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने भाखजे,
पांच तिथी म करो आरंभ, पाळो शियळ तजो मन दंभ.
तेल तक्र घृत दूध ने दहीं, उगाडा मत मेलो सही,

उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर उपकार करो शुभ चित्त.
दिवस चरीम करजे चोवीहार, चारे आहार तणो परिहार;
दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघळां संताप.
सध्याए आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भव भवे,
चार शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय.
करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजय जायवा,
समेतशिखर आबु गीरनार, भेटीश हुं धन्य धन्य अवतार.
श्रावकनी करणी छे एह, तेहथी थाए भवनो छेह,
आठे कर्म पडे पातळा, पाप तणो छुटे आमला.

मांगलिक भावना.

॥ मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभु
मंगलं स्थुलि भद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥